कला & संस्कृति

क्लास नोट्स

Indian Culture

12 July

- भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से आधुनिक काल तक कला के रूप, साहित्य एवं वास्तुकला के मुख्य पहलू

1. संस्कृति एवं सभ्यता
2. विरासत एवं उनका संरक्षण
3. कला के विभिन्न रूप
4. * वास्तुकला / स्थापत्य कला
   स्तूप, चैत्य, विहार, मंदिर
   मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर
   सिनेगॉग।
   * शिल्पकला
     - स्तम्भ कला
     - मूर्ति कला
     - हस्तकारी
     (i) वस्त्र निर्माण (ii) मृदभांड निर्माण
   * चित्रकला
     - प्रागैतिहासिक चित्रकला।
     - बौद्ध / अजंता चित्रकला।
     - जैन चित्रकला।
     - मुगल चित्रकला।
     - राजपूत चित्रकला।
     - क्षेत्रिय चित्रकला।
       (i) पहाड़ी चित्रकला। (ii) पटना चित्रकला। (iii) दक्षिणी चित्रकला (iv) मधुबनी चित्रकला
   * नृत्य, संगीत, गायन, वादन, रंगमंच
   * भाषा साहित्य
   * धर्म - दर्शन

[प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास के साथ पढ़ेंगे]

1. संस्कृति एवं सभ्यता

संसार
- प्रकृति प्रदत्त
- मानव निर्मित → 'संस्कृति' कहलाता है
  - मूर्त/भौतिक संस्कृति
    - भवन
    - परिवहन के साधन/सड़क
    - भौतिक सुविधाएं

    → यही सभ्यता कहलाती है।
  - अमूर्त/अभौतिक संस्कृति
    - रहन-सहन
    - खान-पान
    - रीति-रिवाज
    - धार्मिक विश्वास
    - भाषा
    - विचारधारा

    → संस्कृति कहलाया

आरंभ में

मानव →	मानव →	मानव →	मानव
* शिकारी जीवन	पशुपालन	कृषि उत्पादन	औद्योगिक समाज/क्रांति
* पैदल यात्रा	बैल	बैलगाड़ी	मोटरगाड़ी, वायुयान
* पेड़/गुफाओं में रहता था	झोपड़ी	स्थायी समाज, ईंट से निर्माण/झोपड़ी	पूर्णत: पक्का मकान → बहुमंजली
↓ प्रकृति पूजक धार्मिक विश्वास			↓ धार्मिक विश्वास

- संस्कृति पर्यावरण का मानव निर्मित भाग है। मानव अपनी बुद्धि और विवेक से जिन चीजों का निर्माण करते चलता है वह संस्कृति है।

- संस्कृति मानव जीवन और समाज को जानने और समझने में सहायक होती है वस्तुतः किसी समाज में गहराई तक मौजूद गुणों का समग्र नाम संस्कृति है। यह किसी समाज के दीर्घकाल तक अपनायी गई पद्धतियों का परिणाम है

- मनुष्य स्वभावतः एक प्रगतिशील प्राणी है वह अपने बुद्धि विवेक के माध्यम से अपने चारों ओर के प्राकृतिक परिस्थितियों को निरंतर सुधारता चलता है ऐसी प्रत्येक जीवनपद्धति, रीतिरिवाज, आचार विचार नवीन अनुसंधान जिनसे मनुष्य पशुओं के दर्जे से ऊपर उठता है सभ्य कहलाता है

- सभ्यता से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है। जबकि संस्कृति मानसिक क्षेत्र की प्रगति को दर्शाती है वस्तुतः मनुष्य केवल भौतिक परिस्थितियों में सुधार करके संतुष्ट नहीं होता केवल खाद्य आवश्यकताओं को पूर्ति करके तृप्त नहीं होता दरअसल शरीर के साथ मन और आत्मा भी है और उसको संतुष्ट करने के लिए मनुष्य जो विकास करता है उसे संस्कृति कहते हैं सौंदर्य की रचना करते हुए मानव संगीत, साहित्य, चित्र, स्थापत्य, मूर्ति आदि अनेक कलाओं का

निर्माण करता है।

- सामान्यत: संस्कृति के दो पक्ष होते हैं एक अभौतिक और दूसरा भौतिक। अभौतिक को ही संस्कृति एवं भौतिक संस्कृति को सभ्यता के नाम से जाना जाता है। संस्कृति जहां आंतरिक है जिसमें विचार कलात्मक अनुभूति, रीति-रिवाज, मेले-त्योहार, धार्मिक आस्थाओं का समावेश होता है जबकि सभ्यता बाह्य है। इसतरह भिन्नताओं के होते हुए भी सभ्यता और संस्कृति एकदूसरे से जुड़े हुए हैं क्योंकि दोनों ही मानव निर्मित हैं।

2. विरासत (Heritage)

1. अर्थ
2. विरासत का वर्गीकरण
   - (i) प्राकृतिक विरासत
     - भूमि
     - पर्वत
     - नदियां/समुद्र
     - वन्य जीव
     - वन
     - खनिज संसाधन
     - मरुस्थल
   - (ii) सांस्कृतिक विरासत
     - * मूर्त सांस्कृतिक विरासत
       - स्तूप, चैत्य विहार मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा
       - मूर्तियाँ
       - मृद्भांड/बर्तन
       - अभिलेख
     - * अमूर्त सांस्कृतिक विरासत
       - भाषा
       - रीति रिवाज
       - मेले/त्योहार
       - धर्म-दर्शन
       - नृत्य संगीत
3. विरासत का संरक्षण
   - कारण
   - चुनौतियाँ
   - प्रयास

अर्थ :-

विरासत वह है जो हमें पूर्वजों से प्राप्त हुई है और हमारे चारों ओर विद्यमान है। यह प्राकृतिक अथवा निर्मित है। यह एक ओर किसी स्थान, क्षेत्र अथवा देश तो दूसरी ओर एक परिवार समुदाय, एवं लोगों की विशिष्ट पहचान है।

वर्गीकरण :-

विरासत को प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के रूप में बांटा जा सकता है -

प्राकृतिक विरासत :-

- प्राकृतिक विरासत में प्रकृति प्रदत्त संरचनाओं जैसे भूमि, वन, मरुस्थल, पर्वत, नदियां,

समुद्र, ऋतुएँ, जीव अंतु, खनिज संसाधन आदि सम्मलित है। भारत की ऋतुओं की विविधता भूमि प्रकारों एवं जीव अंतुओं की विविधता ने देश की सांस्कृतिक विरासत के निर्माण को प्रभावित किया। इसलिए भारतीय संस्कृति प्रकृति, पर्यावरण एवं लोगों के बीच निकट संबंधों का परिणाम है।

- पर्वत नदियां पशु-पक्षी हमारी लोक कथाओं, पौराणिक कथाओं एवं कला के अंग रहे हैं। पंचतंत्र की प्रसिद्ध कहानियों अथवा बौद्ध धर्म की जातक कथाओं में पशु पक्षी महत्वपूर्ण चरित्र हैं। देश की विभिन्न स्थानों के लोक कथाओं में पशु पक्षी का प्रयोग विषयवस्तु को अर्थ बताने और विचारों को स्पष्ट करने के लिए किया गया।

- प्रकृति की शक्तियों को भारतीय संस्कृति में दैवीय रूप दिया गया है जैसे गंगा-यमुना की पूजा, पीपल-तुलसी जैसे पेड़-पौधों को पवित्र माना गया।

- भारतीय संगीत में प्रकृति एवं ऋतुओं के साथ गहरे संबंध देखे जा सकते हैं जैसे मेघराग का विकास हुआ तो साथ ही बारहमासा के आधार पर नायक-नायिका की मनोदशा का उल्लेख साहित्य में हुआ है। इसी तरह अनेक त्योहारों का संबंध ऋतुओं से है। हमारी चिकित्सा पद्धति में आयुर्वेद पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर है। इस दृष्टि से प्राकृतिक विरासत एवं सांस्कृतिक विरासत में

विशिष्ट संबंध देखा जा सकता है।

सांस्कृतिक विरासत :-

- सांस्कृतिक विरासत मनुष्य की अपनी योग्यता, कुशलता एवं कलात्मक प्रतिभा के बल पर की गई रचना है यह विभिन्न धार्मिक सामाजिक परम्पराओं का परिणाम हो सकती है। सांस्कृतिक विरासत को मूर्त एवं अमूर्त वर्ग में रखा जाता है। मूर्त विरासत को पुरातात्विक विरासत भी कहते हैं। इसमें विभिन्न भवन किले सिक्के अभिलेख मूर्तियाँ मृदभाँड सम्मलित हैं।
- अमूर्त विरासत में विचारों से लेकर परम्पराओं तक, रहन सहन के ढंग, भाषा, रीति-रिवाज आदि सम्मलित होते हैं। इन सबसे हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक सुन्दर और समृद्ध रंगीन चित्र बनता है वस्तुतः अनेक विचार और विश्वासों का मिश्रण ही हमारी संस्कृति को समासिक (मिश्रित) संस्कृति बनाता है। इसमें विभिन्न भाषाएं जैसे संस्कृत, पाली, प्राकृत तमिल तेलगु, उर्दू, आदि मिलती है। तो नृत्य एवं संगीत के विभिन्न रूप, चित्र कला की शैलियां इसी जीवंत सांस्कृतिक विरासत के अंग है। इन्ही अर्थो में भारतीय संस्कृति को अनेकता में एकता से युक्त कहा जाता है।

* विरासत का संरक्षण

क्यों आवश्यक :-

(i) हमारी विरासत हमारी राष्ट्रीय पहचान का दर्पण है अतः इसका संरक्षण जरूरी है। वस्तुतः विरासत देश एवं लोगों की पहचान को दर्शाती है। व्यक्ति अपने विरासत के साथ अपने पहचान को जोड़ता है और उसे गौरव प्रदान करती है अतः इस गौरव की प्रेरणा का संरक्षण आवश्यक है।

राष्ट्रीय पहचान का दर्पण

(ii) पारम्परिक कलाओं एवं हस्त कलाओं को संरक्षण देने से ही इनकी विविधता संभव है जिससे साथ लोगों की आजीविका भी जुड़ी है।

विविधता की संभव होना

(iii) हमारा विशाल पर्यटन उद्योग भी विरासत के दम पर चल रहा है। हमारी विरासत पर्यटकों को हमारे देश की ओर आकर्षित करती है अतः देश के लोगों को एक भाग से दुसरे भाग तक जाने के लिए प्रेरित करती है इस तरह यह राष्ट्रीय एकीकरण के साथ साथ उस क्षेत्र के लोगों के लिए आर्थिक लाभ का अवसर प्रदान करती है ने साथ ही विदेशी मुद्रा प्राप्ति का साधन भी बन जाती है।

विशाल पर्यटन उद्योग

विरासत के लिए चुनौतियां :-

13July

1.- समृद्ध विरासत को बनाए और बचाए रखना एक बड़ी चुनौती है। वस्तुतः प्राकृतिक विरासत चाहे भूमि, समुद्र, जंगल, मरुस्थल, वनस्पतियां एवं पशुपक्षी सभी को समुचित विकास योजना के अभाव एवं उनके निरंतर दुरुपयोग होने के कारण खतरा।

- बनाए और बचाए रखना

2.- भूमण्डलीकरण के कारण होने वाले तीव्र परिवर्तनों ने विरासत के लिए चुनौती प्रस्तुत की है। वस्तुतः औद्योगिकरण के कारण होने वाले विभिन्न प्रदूषणों से प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के लिए खतरा बढ़ा है

- भूमण्डलीकरण के कारण तीव्र परिवर्तन

3.- पर्यटन में हुई अनियंत्रित वृद्धि ने भी चुनौतियां बढ़ायी है।

- पर्यटन में अनियंत्रित वृद्धि

4.- पर्यावरण एवं विरासत के संरक्षण के प्रति लोगों में जागरूकता का अभाव है।

- लोगों में जागरूकता का अभाव

संरक्षण के लिए किए गए उपाय या प्रयास :-

- संविधान निर्माताओं ने भारतीय संविधान में विरासत के संरक्षण के लिए संविधान के मूल अधिकारों, राज्य के नीति निदेशक तत्वों एवं मौलिक कर्तव्यों के अन्तर्गत प्रावधानों को बनाया है। वस्तुतः अनुच्छेद 29 के तहत

अल्पसंख्यकों के हितों के संरक्षण के संदर्भ में कहा गया कि – "भारत के किसी भाग में निवास करने वाले किसी भी वर्ग के नागरिकों अपनी विशिष्ट भाषा, लिपि या संस्कृति को संरक्षित करने का अधिकार है।"

– इसी तरह संविधान के अनुच्छेद 49 में उल्लेखित है कि राष्ट्रीय महत्व के प्रत्येक स्मारक कलात्मक या ऐतिहासिक स्थल तथा वस्तुओं को खराब होने, उन्हें हटाने, बेचने एवं निर्यात से बचाना राज्य का दायित्व होगा।

– इसीतरह Article 51(A) के तहत विरासत संरक्षण के लिए नागरिकों के कर्तव्य का उल्लेख किया गया है कि "हमारी समासिक संस्कृति की समृद्ध विरासत का सम्मान एवं संरक्षण करें। वनों, झीलों, नदियों एवं वन्य जीवों सहित पर्यावरण की बचाव और उसमें सुधार करें तथा प्राणियों के प्रति करुणा का भाव रखें।

– 1952 में भारतीय वन्य जीव बोर्ड की स्थापना की गई। यह सरकार को वन्य जीवों के संरक्षण एवं बचाव के संदर्भ में तथा राष्ट्रीय उद्यान पक्षी-विहार, चिड़िया-घर के निर्माण के संदर्भ में परामर्श देता है।

- वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम 1972 के तहत राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना की गई है।
- भारतीय निधि व्यापार अधिनियम 1876 के तहत कहा गया कि अचानक कोई वस्तु मिलने पर लोगों को संबंधित अधिकारियों को सूचित करना अनिवार्य है यह अधिनियम ब्रिटिश सरकार ने अचानक प्राप्त होने वाले खजाने को संरक्षित करने के लिए बनाया था।
- पुरातात्विक विरासत को सुरक्षित रखने के लिए संसद ने प्राचीन स्मारक एवं पुरातत्वीय स्थल अवशेष अधिनियम 1958 पारित किया जिसके तहत पुरातात्विक खुदाई से निकली सामग्रियों, मूर्तियों, आदि की संरक्षण की बात की। यह अधिनियम भारत सरकार 1904 के अधिनियम का विस्तार है जो कर्जन के समय आया था। यह अधिनियम यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी व्यक्ति या एजेंसी सरकार के अनुमति के बिना पुरातात्विक खुदाई नहीं कर सकता है।
- सरकार ने एक हृदय परियोजना की शुरुवात की है वस्तुतः 14 July 2015 को शहरी विकास मंत्रालय ने पंजाब के अमृतसर से 12 स. शहरों के लिए राष्ट्रीय विरासत विकास एवं संवर्धन योजना शुरु की जिसे 27 महीने (March 2017) में पूरा करना है इसमें विरासत स्थलों के एकीकृत समावेशी

- विदेशी विश्वविद्यालयों में भारतीय विषयों के अध्ययन की व्यवस्था करना।
- कलाकार मंडलियों का आदान-प्रदान करना।
- वार्षिक मौलाना आजाद स्मृति व्याख्यान एवं मौलाना आजाद निबंध प्रतियोगिता का आयोजन करना।
- पुस्तकालयों की स्थापना करना।

यूनेस्को :-

Unesco विश्व विरासत सूचि जारी करता है वस्तुतः 1972 में Unesco विश्व विरासत संरक्षण अधिनियम बना जिसके तहत वह विरासत स्थलों को सूचिबद्ध करता है। यह सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक स्थलों के लिए कुल 10 मानदंड निर्धारित करता है। इस सूचि में शामिल होने के लिए इनमें से किसी एक मानदंड पर खरा उतरना चाहिए। इन मानदंडों में प्रमुख है -

i) सांस्कृतिक स्थल के लिए वह मानव की श्रेष्ठ रचनात्मक प्रतिभा की उत्कृष्ट रचना हो तथा किसी सांस्कृतिक क्षेत्र के भीतर वास्तुकला या प्रौद्योगिकी के विकास, शहर नियोजन तथा स्मारक कलाओं को प्रदर्शित करता हो। साथ ही किसी जीवंत या लुप्त सांस्कृतिक सभ्यता एवं परम्परा का असाधारण प्रमाण हो।

11) इसके तहत 2014 तक भारत के कुल 33 स्थल विश्वविरासत स्थलसूचि में शामिल है जिसमे 7 प्राकृतिक और 26 साँस्कृतिक स्थल हैं। [2014 में प्राकृतिक विरासत के रूप में वृहद हिमालयी राष्ट्रीय उद्यान (हिमाचल प्रदेश) को शामिल किया गया तो साँस्कृतिक स्थल के रूप में 'रानी की बाव' को शामिल किया गया-] भारत के तीन धरोहर विश्वविरासत में शामिल July 2016 तुर्की के इस्तांबुल में - नालंदा विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ का कैपिटल काम्पलेक्स सिक्किम का कंचनजंघा नेशनल पार्क।

पवित्र उपवन :-

पवित्रउपवन कुछ वृक्षों से लेकर सैकड़ो हेक्टेयर तक फैले हुए वन होते हैं। ये जनता के वन है जो किसी न किसी देवता को समर्पित होते है इसमे चराई और शिकार प्रतिबंधित होता है। इसमें केवल सुखी लकड़ियों को संग्रहित करने की अनुमति होती है

- मेघालय में खासी पहाड़ियों के पवित्र उपवनों को लोकिलोंग लिंगदोह कहा जाता है। झारखण्ड में इन्हे सरना / जहेड़ा कहते है। राजस्थान के अलवर में इन्हे शामलाट देह कहते है जिसका प्रमुख वृक्ष खेजड़ी है। केरल में इन्हे 'ईरीलॉंग काबु' कहते है।

एवं टिकाऊ विकास को बढ़ावा देने के लिए कार्य किया जायेगा साथ ही स्मारकों के रख रखाव एवं पारिस्थितिकी तंत्र के उन्नति को ध्यान दिया जायेगा एवं विरासत स्थलों पर पर्यटकों को आकर्षक करने के लिए अधिक से अधिक सुविधाएं दी जायेंगी ये 12 शहर है

वाराणसी
मथुरा
अमृतसर
अजमेर
गया
पुरी
द्वारिका
बादामी (कर्नाटक)
कांचीपुरम (तमिलनाडु)
वेलांकिनी (तमिलनाडु)
अमरावती (आंध्रप्रदेश)
वारंगल (तेलंगाना)

संरक्षण में जनता की भूमिका

विरासत के संरक्षण में जनता की भी भूमिका है। हम अज्ञात स्थलों एवं स्मारकों तथा सामग्रियों की पहचान में सहायता कर सकते हैं। इसकी चौकसी कर सकते है कोई स्मारकों क्षति न कर सके और सामग्रियों को चुरा न सके तथा

अपने आस पास के लोगों को प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति जागरूक कर सकते हैं एवं प्रोत्साहित कर सकते हैं।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (1950)

भारत एवं दूसरे देशों के बीच सांस्कृतिक संबंध एवं आपसी सूझ बूझ को स्थापित करने के उद्देश्य से इसकी स्थापना की गई। यह परिषद भारत सरकार के विदेश मंत्रालय से संबंधित है।

उद्देश्य :-

- सांस्कृतिक क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ संबंध स्थापित करना और उसका विकास करना।
- दूसरे देशों के साथ भारत के सांस्कृतिक रिश्ते से संबंधित नीतियां एवं कार्यक्रम तैयार करना तथा उसके क्रियान्वयन में भागीदारी करना।

प्रमुख कार्य :-

- भारत सरकार की ओर से विदेशी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति स्कीम का संचालन करना।
- भारतीय नृत्य एवं संगीत सीखने के लिए विदेशी छात्रों को छात्रवृत्तियां प्रदान करना।
- विदेशों में सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन करना अर्थात् विदेशों में भारत महोत्सव का आयोजन करना

ATUL PHOTOSTAT

स्थापत्य कला / वास्तुकला

- स्तूप
- चैत्य
- विहार
- मंदिर
- मस्जिद
- गिरजाघर
- गुरुद्वारा
- सिनेगॉग

→ धार्मिक / पवित्र स्थल

* स्तूप

1. क्या है ?
2. विशेषताएँ
3. प्रकार
4. प्रमुख स्तूप

- शारीरिक स्तूप
- पारिभौमिक स्तूप
- उद्देशिक स्तूप
- संकल्पित स्तूप

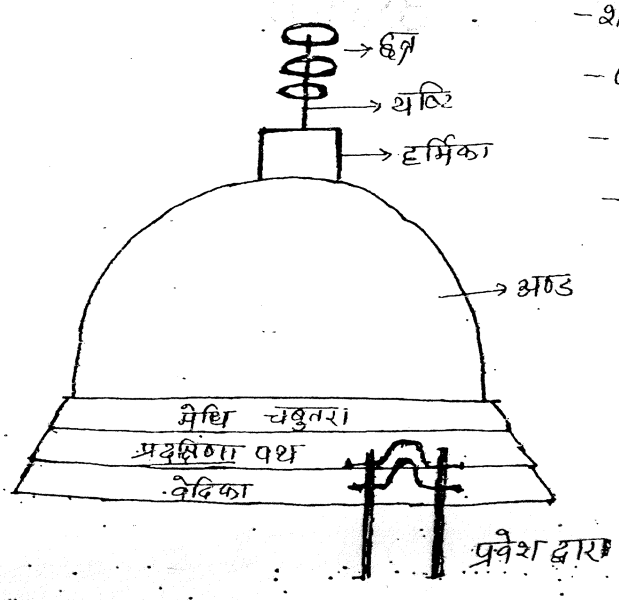

स्तूप

* चैत्य

↓

पूजा गृह

* विहार

भिक्षुओं का निवास

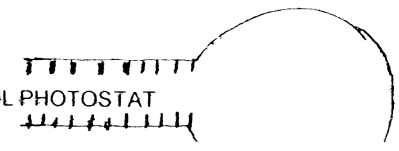

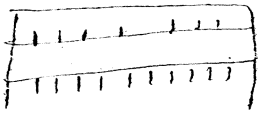

ATUL PHOTOSTAT

स्तूप क्या है :-

स्तूप स्थापत्य कला का एक प्रमुख अंग है जो मुख्यत: बौद्ध धर्म से संबंधित है।

संरचना या विशेषताएँ :-

स्तूप अर्द्धवृत्ताकार संरचना है जो मेधि (चबुतरा) के ऊपर एक उल्टे कटोरी के आकृति होती है। इस अर्द्धवृत्ताकार संरचना को अण्ड कहा जाता है। इसके समतल शीर्ष पर हर्मिका नामक संरचना होती है जहां बुद्ध या उनके शिष्य के अवशेष या उपयोग में लायी गयी वस्तुएं रखी होती है। यह स्तूप का सर्वाधिक पवित्र स्थान होता है।

हर्मिका के मध्य में एक यष्टि लगी होती है जिसके शीर्ष पर तीन छत्र लगे होते है जो श्रद्धा समानता और उदात्तता के प्रतीक है।

मेधि के चारों ओर घुमने के लिए प्रदक्षिणा पथ होता है। यह पूरी संरचना एक वेदिका से घिरी होती है जहाँ विभिन्न दिशाओं में प्रवेश द्वार बने होते है।

स्तूप प्राय: ईंट या पत्थर के बने होते है और स्तूपों में अलंकरण भी मिलता है। स्तूप पर चित्रों के माध्यम से कथानक का अंकन भी होता है तो साथ ही उभारदार शैली में आकृतियां भी बनी होती है।

स्तूप के प्रकार :-

(i) शारीरिक स्तूप :-
इसमें बुद्ध एवं उसके शिष्यों के अंग अवशेष जैसे दाँत, केश, अस्थियाँ आदि रखे जाते थे।

(ii) पारभौमिक स्तूप :-
इसमें बुद्ध द्वारा उपयोग में लाई गई वस्तुएं जैसे चरण पादुका, भिक्षा पात्र आदि रखे जाते थे।

(iii) उद्देशिक स्तूप :-
इसके तहत वे स्तूप आते हैं जिन्हें बुद्ध के जीवन की घटनाओं से संबंधित या उनकी यात्रा से पवित्र हुए स्थानों पर स्मृति के रूप में बनाया जाता था।

(iv) संकल्पित स्तूप :-
इस प्रकार के स्तूप बौद्ध श्रद्धालुओं द्वारा विभिन्न स्थानों पर बनाए जाते थे जो आकार में छोटे होते थे।

प्रमुख स्तूप :-

1. अशोक द्वारा बड़ी संख्या में स्तूप बनवाए गए जिसमें सारनाथ एवं सांची में बनाए गए स्तूप प्रसिद्ध हैं उसने तक्षशिला में एक धर्मराजिका नामक स्तूप का निर्माण कराया।
2. अशोक के समय बनाए गए भरहुत स्तूप (MP)

में मौर्योत्तर काल के शुंग वंश के शासन में एक वेदिका का निर्माण कराया गया।

— नागार्जुनीकोंडा स्तूप (A.P) का निर्माण आंध्र प्रदेश में इक्ष्वाकु वंश के द्वारा कराया गया। यहां पर बने विशेष प्रकार के चबुतरों को आयक कहते हैं। इसी तरह शातवाहन वंश के शासकों के समय अमरावती स्तूप में अत्यधिक अलंकरण किया गया।

चैत्य :-

शुंग स्थापत्य के अन्तर्गत चैत्य एवं विहार का निर्माण किया जाता है। चैत्य बौद्ध एवं जैन धर्म से संबंधित प्रार्थना होता है। इसे पहाड़ियों को काट कर बनाया जाता है।

चैत्य एक आयताकार कक्ष के रूप में होता है जिसका अंतिम सीरा अर्द्धवृत्ताकार होता है महाराष्ट्र में स्थित कार्ले का चैत्य सबसे बड़ा है यहां के स्तम्भ अत्यंत आकर्षक है।

विहार :-

विहार भी धार्मिक स्थापत्य का अंग है जो बौद्ध एवं जैन धर्म से जुड़ा है वस्तुतः भिक्षुओं के निवास के लिए पहाड़ियों को काट कर बनायी गई गुफाओं को विहार कहा जाता है।

उड़ीसा के शासक खारवेल द्वारा उदयगिरी खण्डगिरी पहाड़ी पर बनवायी गयी दो मंजीली रानी गुफा विहार का प्रमुख उदाहरण है जो जैनों से संबंधित है। इसके अतिरिक्त पश्चिमी भारत में कार्ले, भज, नासिक स्थानों पर बने विहार भी उल्लेखनीय हैं।

* मंदिर स्थापत्य

मंदिर स्थापत्य के अंग

- अधिष्ठान
- गर्भगृह
- शिखर < रेखीय / पिरामिडनुमा
- गोपुरम / प्रवेशद्वार
- शीर्ष → आमलक (कलश के समान) → स्तूपिका

मंदिर निर्माण की शैलियां

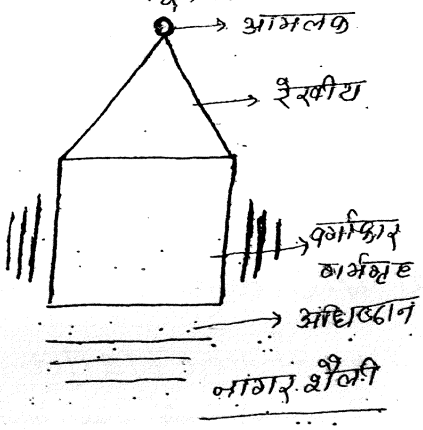

1. नागर शैली — हिमालय से विंध्य पर्वत माला तक
2. द्रविड़ शैली — कृष्णा नदी घाटी से कन्या कुमारी तक
3. वेसर शैली
   - नागर एवं द्रविड़ शैली का मिश्रण
   - विंध्य से कृष्णा नदी तक

प्रमुख मंदिर एवं क्षेत्रिय मंदिर

नागर शैली

द्रविड़ शैली

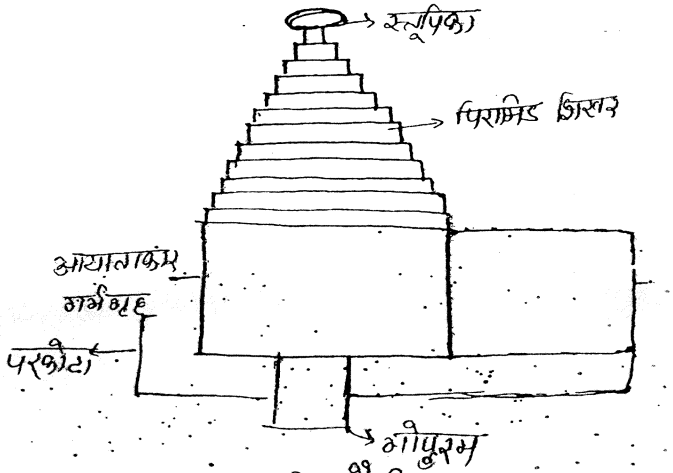

- हड़प्पा काल
- वैदिक काल
- महाजन पद / बुद्ध काल
- मौर्य काल
- गुप्त काल
- गुप्तोत्तर काल

ATUL PHOTOSTAT

मंदिर स्थापत्य का अंग :-

1. अधिष्ठान :- यह चबुतरे नुमा संरचना होती है जिसे आधार बनाकर मंदिरों का निर्माण किया जाता है नागर शैली में अधिष्ठान एक आवश्यक तत्व है जबकि द्रविड़ शैली में यह आवश्यक तत्व नहीं है।

2. गर्भगृह :-

यह मंदिर का सर्वाधिक पवित्र भाग होता है जिसमें किसी देवी देवता की स्थापना की जाती है द्रविड़ शैली में यह आयताकार जबकि नागर शैली में वर्गाकार होता है।

3. शिखर :-

गर्भगृह के ऊपर की विशाल निर्मित संरचना को शिखर कहा जाता है। नागर शैली में शिखर रेखीय होते थे और शिर्ष पर आमलक की संरचना होती थी। जबकि द्रविड़ शैली में शिखर पिरामिड के आकार की होती थी और शिर्ष पर स्तूपिका की संरचना होती थी।

4. गोपुरम :-

यह मंदिर का प्रवेश द्वार होता है जो द्रविड़ शैली का अंग होता है। यह अत्यन्त विशाल और अलंकृत होता है गोपुरम की यह विशेषता राजनैतिक आर्थिक समृद्धि को दर्शाती है।

5. परकोटा / दीवार

द्रविड़ मंदिरों में गोपुरम बनाए जाने का एक बड़ा कारण उसका दीवारों से घिरा होना था। नागर शैली के मंदिरों में यह प्रायः नहीं पाया जाता था।

मंदिर निर्माण शैली

नागर शैली :-

- नागर शैली में मंदिर चतुष्कोणीय होते हैं गर्भगृह वर्गाकार तथा मंदिर का सर्वोच्च शिखर रेखीय तथा शीर्ष पर आमलक की संरचना होती है।
- मंदिरों में सभा-भवन तथा प्रदक्षिणा पथ भी होता था। ये मंदिर हिमालय से विंध्य पर्वत माला तक दिखाई पड़ते हैं, उड़ीसा के मंदिर शुद्ध नागर शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं

द्रविड़ शैली :-

- इस शैली में मंदिर अष्टकोणीय संरचना से युक्त है और गर्भगृह आयताकार तथा शिखर पिरामिड के आकार का होता है जिसके शीर्ष पर स्तूपिका होती है।
- द्रविड़ मंदिरों में प्रवेश हेतु गोपुरम अत्यन्त आकर्षक होते हैं
- द्रविड़ शैली के ये मंदिर सामाजिक आर्थिक गतिविधियों में संलग्न होते हैं उत्पादन एवं व्यापार में हिस्सा लेते हैं तथा निर्माण कार्य

हेतु आर्थिक गतिविधियों के संदर्भ में ये कर्ज भी देते हैं और उस पर ब्याज प्राप्त करते हैं इसतरह ये बैंकिंग गतिविधियों से युक्त होते हैं इनकी यह भूमिका इन्हें उत्तर भारत की मंदिरों से अलग करती है। साथ ही ये सामाजिक उत्सव विवाह आदि के केन्द्र होते थे इसलिए इनका आकार प्रकार भी विशाल हुआ।

वेसर शैली :-

मंदिर निर्माण की वेसर शैली में नागर और द्रविड़ शैली का मिश्रण मिलता है यह शैली विन्ध्य पर्वतमाला से कृष्णा नदी के क्षेत्रों तक मिलती है। इस शैली की प्रमुख मंदिरों में होयसल शासकों के द्वारा मैसूर के हेलबिड में बनाया गया होयसलेश्वर मंदिर प्रमुख है।

नागर शैली के प्रमुख मंदिर

1. गुप्तकालीन मंदिर :-

- गुप्तकालीन मंदिरों का निर्माण एक ऊंचे चबुतरे पर होता था जिसपर चढ़ने के लिए चारों ओर सिढ़ियां बनी होती थी। मंदिर के भीतर एक गर्भगृह होता था जहां देवी देवताओं की मूर्ति स्थापित किया जाता है।
- गर्भगृह में एक प्रवेश द्वार होता है जो अलंकृत

होता है इसके चारों ओर
मंदिर की छत प्रायः समतल होती थी किन्तु मंदिर शिखर युक्त बनने लगे जैसे देवगढ़ (झाँसी) दशावतार मंदिर।

- मंदिर मुख्यतः पत्थर से बनते थे। किन्तु कुछ एक मंदिर ईंट से भी बनाए गए जैसे कानपुर का भीतरगाँव का मंदिर।
- मंदिर का भीतरी भाग सादा होता था और गर्भगृह पर शंख का चिन्ह बना होता था। गुप्तकालीन मंदिर नागर शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उड़ीसा मंदिर

1. जगमोहन — मंडप (सभा भवन)
2. पिण्ड — अधिष्ठान (चबुतरा)
3. मस्तक — शीर्ष (आमलक)
4. गण्डी — शिखर
5. देवल / देउल — गर्भ गृह

उड़ीसा के प्रमुख मंदिरों में पुरी के निकट कोणार्क सूर्य मंदिर है यह अश्व द्वारा खींचे जाने वाले, विशाल पहियों वाले सूर्य देव के आकाशीय रथ की परिकल्पना पर आधारित है। इस मंदिर के विभिन्न चित्रों में अलंकरण मिलता है जो पृथ्वी में जीवन के आनन्द और सूर्य की ऊर्जा देने की शक्ति को दर्शाता है इस मंदिर को ब्लैक पगोडा भी कहा जाता है।

इसका निर्माण नरसिंह प्रथम ने किया था। इसी तरह पुरी के जगन्नाथ मंदिर का निर्माण अनन्तवर्मन चोडगंग ने किया था।

खजुराहो मंदिर :-

इन मंदिरों का निर्माण बुंदेलखण्ड क्षेत्र के चंदेल शासकों द्वारा 10वीं-11वीं सदी में किया गया। यह मंदिर नागर शैली के अंतगर्त बने हैं। यहाँ बने मंदिर शैव वैष्णव एवं जैन धर्म से संबंधित है। इसलिए एक विद्वान फर्ग्यूसन ने कहा — खजुराहो के मंदिर साम्प्रदायिक सौहार्द की प्रेरणा से निर्मित हुए हैं।

विशेषताएं :-

- इन मंदिरों का निर्माण खुले स्थानों पर हुआ है और इसके चारों ओर कोई दीवार नहीं मिलती।
- ये मंदिर बलुवा पत्थर से बने हैं
- मंदिर एक ऊँचे अधिष्ठान पर बनाया गया है जहाँ अत्यंत भव्य शिखर एवं अलंकार खिड़कियों का निर्माण किया गया है।
- मंदिर के शिखर पर कलश एवं आमलक की संरचना मिलती है।
- मंदिर के प्रवेश द्वार को सजाया गया है। यहाँ बने मंदिर पंचायतन शैली में निर्मित हैं इसके तहत एक मुख्य मंदिर के चारों दिशाओं में चार अतिरिक्त मंदिर बने होते हैं।

खजुराहो के प्रमुख मंदिरों में कंदरिया महादेव का मंदिर लक्ष्मण मंदिर, चतुर्भुज मंदिर एवं पार्श्वनाथ मंदिर प्रमुख हैं।

* राजस्थान-गुजरात समूह मंदिर

राजस्थान गुजरात के क्षेत्र में सोलंकी शासकों के संरक्षण में विभिन्न मंदिरों का निर्माण हुआ। राजस्थान में आबू पर्वत के पास दिलवाड़ा जैन मंदिर नागर शैली से संबंधित है। मंदिर में बने गुंबद एवं प्रवेश द्वार ~~उल्लेखनीय~~ प्रवेश द्वार पर नौ ग्रहों का अंकन इसकी उल्लेखनीय विशेषता है। इस मंदिर में संगमरमर का प्रयोग हुआ है। यहाँ छत के केन्द्रीय भाग में बने कोष्ठक मेहराब की संरचना प्रतीक होते हैं जबकि वास्तव में मेहराब का प्रयोग नहीं किया गया है।

- गुजरात में बलुआ पत्थर से बने हुए मंदिर उल्लेखनीय है और इनमें प्रमुख है- मोढ़ेरा का सूर्य मंदिर।

* द्रविड़ कला शैली के मंदिर

पल्लव कला :-

* महेन्द्र वर्मन शैली → मंडप (मंदिर)
  ↓
  सादे / साधारण
* मामल्ल शैली (नरसिंह वर्मन-I) → 'रथ' मंदिर का निर्माण
  ↓
  एकाश्मक (एक ही पहाड़ी को काट कर बनाए गए)
  ↓
  'सप्त पगोड़ा'
* राजसिंह शैली (नरसिंह वर्मन-II) → इमारती मंदिर
* नंदी वर्मन कला

पल्लव कला मंदिर स्थापत्य का द्रविड़ शैली से संबंधित है पल्लवों ने वास्तुकला को काष्ठ कला से मुक्त किया और पहाड़ियों को काट कर मंदिर निर्माण की नई शैली का विकास किया शासकों के नाम के आधार पर मंदिर निर्माण की चार प्रमुख शैलियां विकसित हुई।

(i) **महेन्द्र वर्मन शैली** :- इसमें मुख्य रूप से चट्टानों को काट कर मंदिरों का निर्माण किया गया। इस दौरान मंदिरों को 'मंडप' कहा गया। इस तरह बने हुए मंडप सादगी पूर्ण होते थे। यहां बने हुए पंच पांडव गुफा मंदिर में एक तरफ कृष्ण को गोवर्धन पर्वत

उठाये हुए दिखाया गया है तो दूसरी तरफ गाय दुहते हुए उन्हें दिखाया गया है।

(ii) मामल्ल शैली :-

इस शैली में रथ मंदिरों का निर्माण किया गया। ये रथ मंदिर एकाश्मक हैं। इन रथ मंदिरों को सामुहिक रूप से सप्त पगोडा कहा जाता है। इनमें प्रमुख है धर्मराज रथ (यह सबसे बड़ा है और इसमें शैव नरसिंह वर्मन की मूर्ति बनी हुई है) अर्जुन रथ, भीम रथ, गणेश रथ, द्रौपदी रथ (यह सबसे छोटा है) ये रथ मंदिर मूर्तिकला के लिए भी प्रसिद्ध हैं। इनमें दैवी देवताओं एवं शासक की प्रतिमा बनी है।

(iii) राजसिंह शैली (नरसिंह वर्मन-II) :-

इस शैली में मंदिर ईंट एवं पत्थर बनने लगे अर्थात् ईंमारती मंदिर बनने लगे। इस शैली का प्रमुख मंदिर है- कांची का कैलाशनाथ मंदिर। इसमें शिव पार्वती नृत्य प्रतियोगिता को दर्शाया गया है तथा महाबलीपुरम का समुद्र तटीय मंदिर (Shore temple) उल्लेखनीय है।

मस्तिष्क
↓
द्रविड़ कला की विशेषता
↓
संरचना
↓
निष्कर्ष :- इस शैली का विकास चोल वास्तुकला में दिखाई पड़ता है।

(iv) नंदी वर्मन शैली :-

इस शैली में मंदिर अत्यंत छोटे बनने लगे और पल्लवों की राजनीतिक कमजोरी को दर्शाता है।

* चोल वास्तुकला

- चोल मंदिर स्थापत्य की द्रविड़ शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं यहां द्रविड़ शैली का पूर्ण विकास देखा जा सकता है जिसका आधार पल्लव कला ने तैयार किया।

- चोलों ने 10वीं-11वीं सदी में दक्षिण भारत में एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया। इस विशालता का दर्शन उनके मंदिर निर्माण में मिलता है इन मंदिरों में पिरामिड नुमा शिखर और विशाल गोपुरम तथा पूरा मंदिर एक परकोटे (दीवार) से घिरा हुआ है।
  प्रमुख मंदिर हैं -
  - तंजौर का बृहदेश्वर मंदिर जिसका निर्माण राजराज-I ने किया। इसी तरह गंगईकोंड चोल पुरम का बृहदेश्वर मंदिर जिसका निर्माण राजेन्द्र I ने किया। [इस बृहदेश्वर मंदिर में एक ही पत्थर से निर्मित विशालकाय नंदी की प्रतिमा है जो देश की दूसरी सबसे बड़ी नंदी की प्रतिमा है पहली आंध्रप्रदेश की लेपाक्षी मंदिर में है।]

- चोल मंदिरों की भव्यता और विशालता के संदर्भ में विद्वान फर्ग्युसन ने कहा कि - चोल कलाकार राक्षस की तरह सोचते हैं एवं जौहरियों की तरह तराशते हैं।

* राष्ट्रकूट कला शैली :-

- राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने एलोरा में कैलाश नाथ मंदिर का निर्माण कराया। इसमें द्रविड़ शैली के विमान (शिखर), मंडप तथा गोपुरम उल्लेखनीय है। इस मंदिर की खास विशेषता यह है कि इसे बनाने के लिए पहाड़ी को ऊपर से नीचे की ओर काटते हुए निर्माण किया गया है।
- एलोरा में ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन धर्म से संबंधित गुफा मंदिर बने हैं।
- राष्ट्रकूटों के समय एलिफेंटा गुफा मंदिर का निर्माण कराया गया। यह मंदिर शिव को समर्पित है। इसमें मूर्ति के तीन मुख बने हैं जो शिव के जनक, पालन, संहारक रूप को दर्शाते हैं

* विजयनगर स्थापत्य कला :-

(1336) – राजधानी हंपी

कल्याण मंडप → सैकड़ों स्तंभों से निर्मित

↓

सभाभवन

- विजयनगर मंदिर स्थापत्य की द्रविड़ शैली का प्रतिनिधित्व करता है शासक कृष्ण देव राय के शासन काल में बना। विट्ठल स्वामी मंदिर इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

- विजय नगर मंदिर कला में गोपुरम को रायगोपुरम कहा जाता है साथ ही मंदिरों में अम्मन मठ एवं कल्याण मंडप उल्लेखनीय है। अम्मन मठ किसी देवी को समर्पित होता है जबकि कल्याण मंडप एक विशालकाय सभा भवन होते हैं जिसमें सैकड़ों स्तंभ होते हैं
- विजयनगर साम्राज्य के शासक हिन्दू धर्म के अनुयायी थे। अतः मंदिर निर्माण को प्रोत्साहित किया। इनकी राजधानी हंपी थी जो वर्तमान में कर्नाटक में अवस्थित है। यहां अनेक मंदिर मिलते हैं। यहां अवस्थित विरूपाक्ष मंदिर उल्लेखनीय है।
- विजय नगर राज्य में बना लेपाक्षी मंदिर नंदी प्रतिमा निर्माण के लिए जाना जाता है। यह देश की सबसे बड़ी एकाश्मक नंदी की प्रतिमा है। लेपाक्षी मंदिर में बनी नृत्य शाला शिव के नृत्य से जुड़ी हुई है।
- विजय नगर के पतन के पश्चात वहां नायकों (सामंतों) का उदय हुआ। फलतः 17वीं सदी के मध्य में तिरूमालाई नायक के काल में सुन्दरेश्वर मंदिर एवं मिनाक्षी मंदिर का निर्माण हुआ। सुन्दरेश्वर मंदिर शिव को समर्पित है जबकि दूसरा मिनाक्षी के रूप में इनकी पत्नी को समर्पित है। इन मंदिरों को मिनाक्षी मंदिर के नाम से ही जाना जाता है वस्तुतः

ATUL PHOTOSTAT

मिनाक्षी मंदिर तमिलनाडु के मदुरै के वैगई नदी के दक्षिण स्थित है।

- मिनाक्षी मंदिर के दीवारों स्तम्भों पर अनेकआकृतियां बनी हुई है। मंदिर के पास एक विशाल सरोवर धार्मिक कार्य हेतु बना था। यह मंदिर सामाजिक आर्थिक जीवन का एक प्रमुख अंग है और एक शहर का केन्द्र बिन्दु है। मिनाक्षी मंदिर का गोपुरम दुनिया का सबसे ऊंचा गोपुरम है।

वेसर शैली :

चालुक्य कला :-

चालुक्य कला वेसर शैली का प्रतिनिधित्व करती है इसे कर्नाटक शैली भी कहते है क्योंकि इसका विकास इसी क्षेत्र में हुआ। वेसर शैली में द्रविड़ एवं नागर शैली का मिश्रण मिलता है अर्थात् यहां दोनों शैलियों की विशेषताएं शामिल है। इस कला के प्रमुख केन्द्र एहोल बनापी एवं पट्टदकल है।

* इण्डो-इस्लामिक शैली

1. विशेषताएँ

भारतीय + इस्लामी शैली का मिश्रण

- भारतीय ↓ त्राबियत ↓ बल्ली + शहतीर + अलंकरण
- इस्लामी ↓ अरकुएट ↓ गुम्बद + मेहराब का प्रयोग + अरबस्क का प्रयोग
  - अरबस्क का प्रयोग ↓ अरबी लिपि में लिखी कुरान की पंक्तियां + फूल पत्तियों से अंकरण पद्धति

2. विकास

- दिल्ली सल्तनत
- मुगल काल

3. क्षेत्रीय कला

- जौनपुर
- मालवा
- बंगाल
- दक्खनी

दिल्ली सल्तनत :-

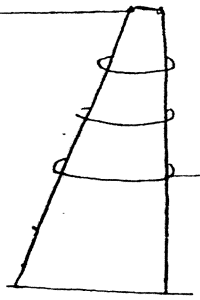

स्टे लेकटाइट हनी कोमिंग तकनीक ।

कुतुबमीनार

अलाई दरवाजा

सलामी

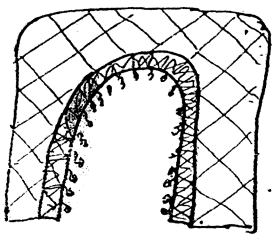

→ चार बाग

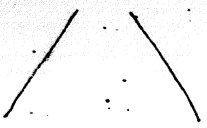

ATUL PHOTOSTAT

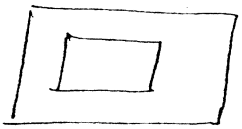

विशेषताएँ :-

- इण्डो इस्लामी स्थापत्य की सर्वप्रमुख विशेषता त्राबियत एवं अरकुएट शैली का सुन्दर समन्वय है वस्तुत: भारतीय शैली त्राबियत कही जाती है जिसमें बल्ली एवं शहतीर के प्रयोग से निर्माण किया जाता था और अलंकरण के लिए फुल पत्ती का प्रयोग किया जाता था। दूसरी तरफ इस्लामिक शैली भवन निर्माण में अरकुएट के नाम से जानी जाती है जिसमें गुम्बद एवं मेहराब का प्रयोग किया जाता है तो साथ ही सजावट के लिए अरबस्क पद्धति का प्रयोग होता है वस्तुत: अरबी लिपि में लिखी गई कुरान की पंक्तियों के साथ फूल पत्तियों के साथ भवनों की सजावट या अलंकरण की पद्धति अरबस्क कहलाती है। यह इस्लामी स्थापत्य कला की खास विशेषता है।

- भवन निर्माण सामग्री में पत्थरों का खूब प्रयोग किया गया और पत्थरों को आपस में जोड़ने के लिए चूना-पत्थर, गारा, जिप्सम का प्रयोग किया गया।

- गुंबद और मेहराब इस्लाम की देन नहीं है वस्तुत: इसकी आरंभिक संरचना रोम में मिलती है और इसे भारत में लाने का श्रेय कुषाण शासकों को दिया जाता है किन्तु भारत में भवन निर्माण में लोकप्रिय बनाने का श्रेय तुर्की शासकों को दिया जाता है।

TOPPER says ATUL PHOTOSTAT IS THE MOST TRUSTED SHOP FOR IAS ASPIRANTS.....

- गुंबद और मेहराब की संरचना ने भवनों के विशाल सभा भवनों के निर्माण को सहज बना दिया। वस्तुतः गुंबद और मेहराब ने छतों को सहारा देने के लिए बड़ी संख्या में बनने वाले स्तंभों की आवश्यकता को समाप्त कर दिया अतः गुंबद और मेहराब के माध्यम से भवनों में विशालता और मजबूती दोनों मिली।

- चूंकि इस्लाम में प्राणियों के चित्रण को मान्यता नहीं थी। अतः अलंकरण में विभिन्न ज्यामितिय आकृतियों एवं फूल पत्ती से अलंकरण किया गया। इसके तहत कमल एवं बेंट का भी अंकन किया गया। इस तरह इस्लामी स्थापत्य कला के अलंकरण में धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष पहलू शामिल हैं।

दिल्ली सल्तनत में विकास :-

1. इल्बारी काल :-

कुतुबुद्दीन ऐबक ने चिश्ती सूफी संत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के सम्मान में कुतुबमीनार का निर्माण कराया। जिसे इल्तुतमिश ने पूरा कराया। आगे फिरोजशाह तुगलक के काल में इसकी मरम्मत भी हुई। कुतुब का अर्थ एक स्तंभ है जो न्याय एवं संप्रभुता का प्रतीक है। यह मीनार शंकु के आकार

की है और इसमें बने हुए दज्जे स्टेलक्टाइट हनी कोम्बिंग तकनीक से मीनार से जुड़े है

— कुतुबुद्दीन ऐबक ने अजमेर में अढ़ाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद का निर्माण कराया।

खिलजी काल :-

- अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली में अलाई दरवाजा का निर्माण कराया। इसमें घोड़े के नाल के आकार की मेहराब बनी है और कमल की कली की तरह झालरें मौजूद है जो अलंकरण के लिए है साथ ही दीवारों पर आकर्षक जालियां बनी है। इसे मार्शल ने इस्लामी स्थापत्य कला के खजाने का सबसे बड़ा हीरा कहा।

तुगलक काल :-

- इस काल में वास्तु कला की नवीन शैली सामने आयी और अब भवन निर्माण में खुरदुरे पत्थर तिरछी दिवारें (सलामी) का प्रयोग किया गया। सलामी तुगलक स्थापत्य कला की खास विशेषता है और इसका निर्माण भवनों को मजबुती प्रदान करने के लिए किया गया है।

- दिल्ली के पास तुगलकाबाद में गयासुद्दीन तुगलक द्वारा एक आकर्षक भवन बनाया गया जिसकी प्रशंसा करते हुए इब्न बतूता यात्री

मैं कहा - यह सूर्योदय के समय इतनी तेजी से चमकता है कि इसपर किसी की आँख टिक नहीं पाती।

सैयद एवं लोदी काल :-

- सैयद शासन काल में बड़ी संख्या में मकबरों का निर्माण हुआ। अष्टकोणीय मकबरे इस काल की उल्लेखनीय विशेषता है।
- लोदी काल में शहरों को बाग के मध्य ऊँचे चबूतरे पर बनाया गया जिसे चारबाग शैली के नाम से जाना गया जो मुगलों के स्थापत्य के लोकप्रिय शैली के रूप में प्रसिद्ध हुई।

क्षेत्रीय स्थापत्य :-

1. जौनपुर वास्तुकला (शर्की शैली) :-

- जौनपुर में शर्की वंश की स्थापना हुई। इस काल में जौनपुर शिक्षा एवं वास्तुकला का केन्द्र बना इसी संदर्भ में इसे "पूर्व का शिराज" कहा गया।
- शर्की शैली में मुख्यतः वर्गाकार स्तंभ, गहरी दीवारें, छायादार मार्ग, उल्लेखनीय संरचना है साथ ही प्रवेश द्वार की सभावत और उसकी विशालता शर्की शैली की विशेषता है शर्की स्थापत्य पर तुगलक स्थापत्य कला का प्रभाव दिखाई देता है।

प्रमुख उदाहरण - अटाला मस्जिद, झंझरी मस्जिद।

2. मालवा स्थापत्य (M.P) :-

यहाँ की स्थापत्य कला की मुख्य विशेषता धरातल से प्रवेश द्वार तक बनी हुई है। भव्य एवं चौड़ी सिढ़ियाँ है। भवनों में रंगीन पत्थरों का प्रयोग किया गया है। यहां मिनारों का प्रयोग नहीं किया गया है। प्रमुख उदाहरण है। अशर्फी महल, हिंडोला महल, जहाज महल।

3. बंगाल :-

बंगाल के स्थापत्य में मुख्यतः ईंटों का प्रयोग किया गया और नुकीले मेहराब बनाए गए हैं।
प्रमुख उदाहरण हैं — अदीना मस्जिद
बड़ा सोना मस्जिद

4. दक्खनी स्थापत्य :-

14-16 वीं सदी के बीच दक्कन में वास्तुकला की जिस शैली का विकास हुआ उसपर तुगलक एवं ईरानी निर्माण कला (गुम्बद का प्रयोग) का प्रभाव दिखाई देता है। दक्कन में बीजापुर में मोहम्मद आदिल शाह का मकबरा जो गोल गुम्बद के नाम से जाना जाता है अत्यन्त उल्लेखनीय है इसकी खास विशेषता इसके अन्दर आवाज का गूंजना है।

मुगल स्थापत्य कला

15 July

बाबर
हुमायुं
अकबर
जहांगीर
शाहजहाँ → स्थापत्य कला का स्वर्ण युग
औरंगजेब

- मुगल स्थापत्य इंडोइस्लामी शैली का सुन्दर समन्वय प्रस्तुत करती है इसमें भारतीय त्राबियत एवं इस्लामी अरकुरट शैली का मिश्रण दिखाई पड़ता है। इसतरह इसमे बौद्ध, जैन ईरानी कला शैली के तत्व मिलते हैं। भवनों में बलुआ पत्थर एवं संगमरमर का प्रयोग किया गया है।
- भवनों पर बहुमूल्य पत्थर एवं हीरे जवाहरतों से की गई जड़ावट उल्लेखनीय है जिन्हें पित्रादुरा कहते हैं सर्व प्रथम पित्रदुरा का प्रयोग आगरा में स्थित एतमाउद्दौला के मकबरे में किया गया इसका निर्माण नूरजहां ने करवाया था।
- मुगल काल में चार बाग शैली तथा दोहरे गुंबदों का प्रयोग अत्यधिक हुआ है। मुगल शैली का प्रथम स्मारक हुमायुं का मकबरा है

जिसका निर्माण दिल्ली में हाजी बेगम ने कराया था। यह दोहरे गुंबद के प्रयोग का पहला उदाहरण है और इसे ताजमहल का पूर्व रूप माना जाता है।

— अकबर के काल में आगरा और फतेहपुर सिकरी में अनेक भवनों का निर्माण हुआ। इन निर्माण कार्य में लाल बलुवे पत्थर का प्रयोग किया गया। अकबर ने फतेहपुर सिकरी का निर्माण जहांगीर के जन्म के उपलक्ष में कराया था। यहां निर्मित भवन लाल बलुवा पत्थर के बने है। यहां बना पंच महल बौद्ध विहार निर्माण से प्रभावित है। यहां बना बुलंद दरवाजा गुजरात विजय के उपलक्ष में निर्मित है यहां अकबर ने इबादत खाने का निर्माण कराया जहां वह विभिन्न धर्म के लोगों से मुलाकात करता था।

— जहांगीर के काल में आगरा के पास सिकंदरा में अकबर का मकबरा बना है। यहां संगमरमर की जालियां और दीवारों पर की गई सजावट अत्यंत उल्लेखनीय है इसी तरह जहांगीर ने लाहौर में मोती मस्जिद का निर्माण कराया और कश्मीर में शालीमार बाग का निर्माण कराया।

– शाहजहाँ का काल मुगल स्थापत्य कला का स्वर्णकाल माना जाता है। इस काल में संगमरमर का अत्यधिक प्रयोग हुआ है। इसने दिल्ली में ~~निर्मित~~ लालकिला जामा मस्जिद का निर्माण कराया। तो आगरा का ताजमहल एवं लाहौर में शालीमार बाग का निर्माण कराया। ताजमहल का निर्माण अपनी बेगम मुमताज महल के स्मृति में कराया जो चित्रादूरा के उपयोग एवं चार बाग शैली के लिए जाना जाता है। इसे विद्वान हॉवेल ने नारीत्व की साकार प्रतिमा कहा। शाहजहाँ ने मयूरसिंहासन का निर्माण कराया।

– औरंगजेब के काल में मुगल वास्तुकला की अवनति हुई। इसके काल में औरंगाबाद में बना राबियाउद्दौरानी का मकबरा (बीबी का मकबरा) प्रसिद्ध है। इसे ताज की भद्दी नकल कहा जाता है वस्तुतः यह भी चार बाग शैली में निर्मित है।

मस्जिद स्थापत्य के अंग :-

1. **लिवान** :- यह मस्जिद के अंदर खंभों वाला एक कक्ष होता है।

2. **किबला** :- यह मस्जिद में नमाज पढ़ने की की कक्ष की दीवार है जो सदैव मक्का में स्थित काबा की दिशा में होती है। काबा सऊदीअरब

में मक्का में स्थित घनाकार इमारत है। इसकी सात बार परिक्रमा की रीति को 'तवाफ' कहा जाता है। हज यात्रा में इस रिवाज को पूरा किया जाता है।

3. मकसूरा :-
मस्जिद में किबला के आखरी सिरे को मकसूरा कहते है। इसका प्रयोग प्राय: शाही व्यक्तियों एवं मौलवियों को करने का अधिकार था।

4. सहन :-
यह मस्जिद का आंगन है जहां मुस्लिम अनुयायी प्रार्थना के लिए इकट्ठा होते है।

गिरजा घर के अंग :-

1. प्लपिट :-
यह गिरजाघर में एक ऊंचा स्थान होता है जहां से पादरी प्रार्थना करने वालों को संबोधित करता है।

2. चांसेल :-
यह गिरजा घर में पादरियों के लिए आरक्षित क्षेत्र है और यह पर्दे से घिरा होता है। यहीं मुख्य वेदि वेदी रखी जाती है।

3. आइल (गलियारा) :-
यह गिरजा घर में दीवार तथा बैंच

के जगह के बीच एक संकरी जगह होती है।
भारत में पहला गिरजा घर केरल में लगभग 1510 ई० में बनाया।

सिनेगॉग (यहूदी पूजा स्थल):-

सिनेगॉग यहूदी धर्म का पूजा स्थल है। यहूदी धर्म का संस्थापक इब्राहिम को माना जाता है। यहूदी पुरोहित को 'रब्बी' कहा जाता है। इसके धर्मग्रंथ तोरा, तनाका, तालमुद कहलाते है। यहूदी धर्म एकेश्वरवादी है। इसका मानना है कि ईश्वर अपना संदेश पैगम्बर के माध्यम से प्रेषित करता है। मूसा इसके मुख्य पैगम्बर हैं।

* गुरुद्वारा

— सिक्ख शासकों ने अपने निर्माण शैली के कुछ तत्व तो मुगलों से ग्रहण किए किन्तु कुछ नए तत्व भी शामिल किए। सिक्ख वास्तुकला के क्षेत्र में छतरियों की बहुलता तथा धारीदार गुंबद जो कांसे या तांबे से जड़े होते थे तथा झरोखों का अत्यधिक प्रयोग इसकी उल्लेखनीय विशेषता है।

- अमृत सर का स्वर्ण मंदिर एक बड़े सरोवर के मध्य स्थित है और मुख्य भूमि से एक पक्के सेतु से जुड़ा है। अमृत सर शहर की स्थापना सिक्खों के चौथे गुरु रामदास द्वारा की गई। इन्हें अकबर के द्वारा भूमि प्रदान की गई थी। यहां स्वर्ण मंदिर का निर्माण पांचवे सिक्ख गुरु अर्जुन देव के द्वारा किया गया। इसे पहले हरमिंदर साहब भी कहते थे। इसका नींव रखने का श्रेय एक सूफी संत मियां मीर को दिया जाता है। 1803 ई० में महाराजा रंजित सिंह ने इस गुरुद्वारे में संगमरमर का प्रयोग किया और 400 kg की सोने की परत चढ़ाई तब से इसे स्वर्ण मंदिर के नाम से जाना जाता है।

अग्यारी (पारसी पूजा स्थल) :-

यह पारसी धर्म का पूजा स्थल है। पारसी धर्म का संस्थापक जरथुस्ट्र को माना जाता है यह एकेश्वरवादी है और एक ईश्वर अहुरमज्दा में विश्वास करता है इसका प्रमुख ग्रंथ जेंद अवेस्था है प्रमुख चिह्न सदरो (पवित्र कुर्ती एवं धागा) है।

* आधुनिक वास्तुकला (विक्टोरियन वास्तुकला):-

- विक्टोरिया कला शैली भारत में भारतीय और पश्चिमी वास्तुकला का समन्वय करती है इसमें स्तंभो एवं टैरेसदार छतो का अत्यधिक निर्माण किया गया। 1911 में जब भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित करने का निश्चय हुआ तो नई दिल्ली में मुख्य वास्तुकार लुटियन एवं उनके सहयोगी एडवर्ड बेकर ने यूरोपीय शैली के सपनों के अनुरूप निर्माण किया जिसमें विशाल खिड़कियों का निर्माण उल्लेखनीय है।

- दिल्ली में स्थित इंडिया गेट का डिजाईन लुटियन ने तैयार किया और युद्ध स्मारक के रूप में इसका निर्माण 1931 में किया है। इसका निर्माण उन भारतीय सैनिकों के याद में किया गया जो प्रथम विश्व युद्ध एवं अफगान युद्ध में शहीद हुए थे। यह अमर जवान ज्योति स्वतंत्रता के बाद बना। यह 1971 के भारत-पाक युद्ध में शहीद भारतीय सैनिकों के सम्मान में बना।

- इसी तरह Gateway of India का निर्माण Bombay 1924 में जार्ज विटेट

में किया। इसका निर्माण ब्रिटिश सम्राट जार्ज V एवं रानी मेरी के भारत आगमन (1911) की के सम्मान में हुआ।

— वास्तुकला के क्षेत्र में क्यूरी बेकर का नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने केवल में सामूहिक आवास निर्माण के क्षेत्र में क्रांति लाई। बारीकों के वास्तुशिल्पी के रूप में प्रसिद्ध बेकर का मूल सिद्धांत भवनों को पर्यावरण अनुकूल निर्मित करना था। इसमें जहाँ तक संभव हो सके निर्माण की स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों से निर्मित करने पर बल दिया गया। उन्होंने मकानों के अंदर ~~वायु~~ वायु संचार एवं प्रकाश की उपलब्धता पर बल दिया। इस निर्माण की प्रासंगिकता तो आज भी है। इसलिए इन्हें वास्तुकला की क्रांति के अग्रदूत के रूप में जाना जाता है।

TOPPER says ATUL PHOTOSTAT IS THE MOST TRUSTED SHOP FOR IAS ASPIRANTS.....

* शिल्पकला

स्तम्भ कला :-

* अशोक के स्तम्भ :-

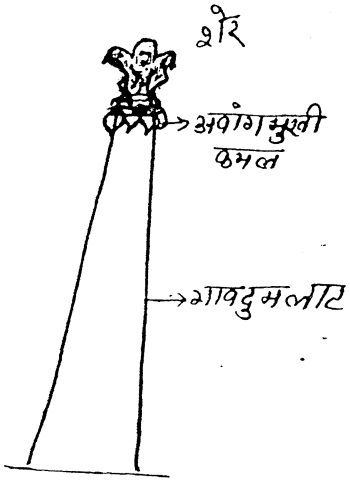

शेर → - शक्ति के प्रतीक
- बैठे हुए हैं
शांत / संयम
- शक्ति एवं संयम के प्रतीक हैं।

मौर्य कालीन अशोक के स्तंभ राजकीय कला का नमूना है। यह स्तंभ मुख्यतः चुनार के बलुवा पत्थर से बनाए गए हैं और एकाश्मक है। यह स्तंभ बिना किसी सहारे के खुले आकाश के नीचे खड़े हैं इनकी ऊँचाई 30-50 फीट तथा वजन लगभग 50 टन है।

संरचना :-

स्तम्भों के दो भाग हैं एक शीर्ष दूसरा गावदुम लाट। स्तम्भ का आधार चौड़ा होता था जो क्रमशः ऊपर आते हुए पतला होता गया। स्तंभ के शीर्ष पर एक चौकी या घंटे की आकृति होती थी जिसे अधोमुखी कमल कहते थे। इस चौकी पर पशु आकृति निर्मित होती थी जैसे

संकिसा स्तंभ – हाथी
लौरिया नंदनगढ़ – शेर
रामपुर स्तंभ – बैल एवं
सारनाथ स्तंभ – चार शेर बने हुए। सारनाथ स्तंभ के शीर्ष की चौकी पर एक दौड़ता हुआ घोड़ा एक बैल, एक हाथी एवं एक सिंह बना हुआ है। सारनाथ स्तंभ का शीर्ष एवं उस पर बने शेर का प्रतीकात्मक अर्थ अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए यहां के शीर्ष चिन्ह को भारत का राजचिन्ह बनाया गया। वस्तुतः यहां मौजूद चारशेर चारों दिशाओं में शक्ति का प्रतीक है, और ये शेर अहिंसक मुद्रा में है यह शक्ति के साथ संयम को सूचित करता है, यह शक्ति धर्मचक्र अर्थात् नैतिक मूल्यों से संचालित है जहां मानव कल्याण प्रमुख लक्ष्य है। यही तो भारतीय संस्कृति की मूल भावना है जो सुदूर कालीन इतिहास से वर्तमान एक निरंतरता में है। यह शीर्ष चिन्ह भारत की विदेश नीति की भी व्याख्या करता है जहां सबके साथ शांति की बात की गई है। इतना ही नहीं परमाणु शक्ति सम्पन्न होते हुए भी भारत विश्व का अकेला ऐसा देश है

और इसका प्रथम प्रयोग न करने की बात करता है इस तरह शक्ति और संयम का समन्वय आज भी मौजूद है। इसतरह भारतीय संस्कृति की निरंतरता इस राजचिन्ह के माध्यम से आज भी प्रवाह मान है।

* हेलियोडोरस का गरुड़ स्तम्भ :-

हेलियोडोरस एक इंडो-ग्रीक राजदूत था जो भारत में शुंग वंश के शासक भागभद्र के विदिशा (M.P) दरबार में आया और वहाँ भागवत धर्म के सम्मान में गरुड़ स्तंभ की स्थापना की।

* मूर्ति कला

1. गंधार शैली 2. मथुरा शैली 3. अमरावती शैली

गंधार क्षेत्र → विभिन्न शासक वर्ग/संस्कृति विषयवस्तु → बुद्ध

- हेलनिष्टिक कला का विकास

यूनानी-रोमन कला के तत्व

↓

ग्रीक-रोमन कला / रोमन-बुद्धिस्ट कला

यूनान की मूल कला → हेलनिक कला

यूनानी कला के तत्व + स्थानीय कला के तत्व → हेलनिष्टिक कला

- यथार्थवादी संस्थान

गंधार शैली :-

गंधार क्षेत्र में समय समय पर विभिन संस्कृति के लोगों का आगमन हुआ अर्थात प्राचीन काल में यूनानी, इण्डो ग्रीक, शक, कुषाण, जैसे शासकों का शासन स्थापित हुआ फलतः एक मिली जुली संस्कृति का विकास हुआ जिसका प्रभाव मूर्तिकला

पर भी देखा जा सकता है।

- गंधार कला हेलेनिस्टिक कला का प्रतिनिधित्व करती है वस्तुत: यूनान की मूल कला हेलनिक कला के रूप में मानी जाती है और जब इस कला का अन्य क्षेत्र के स्थानीय कला से मेल हुआ तो वह हेलनेस्टिक कला कहलाती है वस्तुत: जब यूनान पर रोम का नियंत्रण हुआ तो रोमन सम्राज्य के संस्कृति क पर यूनानी संस्कृति ने गहरा प्रभाव डाला और यूनानी कला के तत्व वहाँ भी प्रचलित हुए। इसलिए इसे ग्रीकोरोमन कला भी कहा गया। जो भारत में भी गंधार कला के रूप में देखे जा सकते है।

- यूनानी साम्राज्य में मानव को विश्व की सर्वोत्कृष्ट संरचना माना जाता था इसलिए मनुष्य के सौन्दर्यपूर्ण चित्रण पर बल दिया जाता था। यूनानी कलाकारों को शारीरिक अंगों का सूक्ष्म ज्ञान था और वह कलाकृतियों में भावभंगिमा एवं गति प्रदान करने की चेष्टा करता था। इसी क्रम में अद्वितीय सौन्दर्य प्रदर्शन में वे ~~बस्त्र~~ नग्न मूर्तियों के निर्माण में पीछे नहीं रहे। कलाकार पारदर्शक वस्त्रों के प्रयोग द्वारा शारीरिक सौंदर्य प्रदर्शित करते थे और निर्माण में केशविन्यास अत्यंत आकर्षित बनाते थे। यूनानी कला के ये तत्व गंधार कला में दिखाई पड़ते है।

- गंधारकला की विषय वस्तु भारतीय थी जिसमें बुद्ध एवं बोधिसत्वों की मूर्तियां बनाई गई परन्तु इस कला शैली में यूनानी रोमन तत्व शामिल थे इसलिए गंधार कला को ग्रीक रोमन या ग्रीको बुद्धिस्ट कला के नाम से भी जाना जाता है। कुषाणों के शासन काल में भारत का रोम से व्यापारिक संबंध रहा अतः यूनानी रोमन कला के तत्व इस काल में आए।

गंधार कला की विशेषताएं :-

- गंधारकला यथार्थवादी है इसमें मानव शरीर एवं संरचना का स्पष्ट अंकन किया गया है इसमें शारीरिक मांसपेशियों का प्रदर्शन है और बालों के अलंकरण को भी दर्शाया गया है। मूर्तियों में बुद्ध के बाल घुंघराले दर्शाए गए हैं जो यूनानी देवता अपोलो के समान हैं कहीं कहीं सिर के बालों को पीछे मोड़कर बांध दिया गया है।
- मूर्तियों में मौजूद वस्त्रों को उनकी सिलवटों के साथ दर्शाया गया है इन मूर्तियों में सौन्दर्य की प्रधानता दिखाई देती है
- गंधार कला में मूर्तियों का निर्माण नीले भूरे रंग की चट्टानों से किया गया है

इस कला के मुख्य संरक्षक शक एवं कुषाण थे।

- गांधार कला के प्रमुख केन्द्र तक्षशीला, बामियान जलालाबाद हड्डा आदि थे।

गांधार कला पर विदेशी प्रभाव :-

- गंधार मूर्ति कला शैली में बुद्ध की मूर्ति यूनानी देवता अपोलो के समान बनाई गई। जहां घुंघराले बाल रखे गए। उन्हें पैरों में जूते पहने हुए दिखाया गया है तथा शारीरिक सौंदर्य पर विशेष बल है इस आधार पर इसे विदेशी या यूनानी रोमन कला कहा गया है।

किन्तु मूर्तियों में इस अंकन मात्र से ही यह पूर्णत: विदेशी शैली नहीं हो जाती वस्तुत: गांधार कला की विषय वस्तु पूर्णत: भारतीय है इसमें बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति की अवस्था में, उपदेश देने की अवस्था में दर्शाया गया है

अत: हम कह सकते हैं कि गंधार शैली के कलाकारों के पास यूनानियों का हाथ था किन्तु हृदय हिन्दुस्तानी था।

* मथुरा शैली

- मथुरा के आसपास के क्षेत्र में इस कला शैली का विकास हुआ इसके संरक्षक कुषाण थे। यह मूलतः स्वदेसी कला शैली के रूप में जानी जाती है।

- मथुरा कला आदर्शवादी कला शैली का प्रतिनिधित्व करती है। इसके तहत ब्राह्मण, जैन, बौद्ध धर्म से संबंधित मूर्तियां बनाई गई।

- मथुरा कला में बुद्ध के मूर्तियों में सिर के बाल और चेहरे पर दाढ़ी नहीं है। वस्त्रों की झालर हाथ में मौजूद है और दाहिना हाथ अभय मुद्रा में है।

- मथुरा कला में बुद्ध की मूर्तियों में प्रभामण्डल को चमकदार बनाया गया है।

- मथुरा कला के मूर्तियों का निर्माण मथुरा के आसपास के लाल बलुआ पत्थर से हुआ है।

- मथुरा कला के जैन तीर्थंकरों के मूर्तियां कंकालीटीला से मिला है। यहाँ जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ को सांपो के साथ दिखाया गया है।

अमरावती कला।

- अमरावती कला शैली का विकास कृष्णा गोदावरी घाटी में 150-350 ई० के बीच हुआ। इस कला के संरक्षक सातवाहन एवं इक्ष्वाकु वंश के शासक थे। इसमें संगमरमर से मूर्तियों का निर्माण किया गया और अलंकरण पर विशेष बल दिया गया
- अमरावती स्तूप में उभारदार शैली में बुद्ध के जीवन तथा जातक कथाओं को अंकित किया गया है यहाँ बुद्ध द्वारा हाथियों के समूह को वश में करते हुए दिखाया गया है।
- अमरावती कला के प्रमुख केन्द्र नागार्जुनीकोंडा, घंटशाल, जग्गय्या पेटा गोली हैं।

पाल शैली :-

इस शैली के अन्तर्गत (बंगाल के पाल शासक) मुख्यतः कांसे एवं पत्थर से मूर्तियां बनाई जाती थी और प्रायः सांचे में ढाल कर मूर्तियां बनाई जाती थी। इसमें ब्राह्मण एवं बौद्ध धर्म से संबंधित मूर्तियां बनी और मूर्तियों को पूर्णतः आभूषणों से ढक दिया जाता था।

16 July

* वस्त्र निर्माण कला

1. जामदानी तकनीक (Inlay) :-

बुने हुए सूती कपड़ों में आकर्षक डिजाइन बनाया जाता है। बुनकर सफेद पृष्ठभूमि में रंगीन पैटर्न डालकर साड़ी बनाते हैं इसका प्रमुख उदाहरण मणिपुर की मोरांगफी तथा तमिलनाडु के कोडियाल करुपार साड़ी प्रमुख है।

2. पैठनी तकनीक :-

महाराष्ट्र के औरंगाबाद के पैठन में सिल्क से बनाई गई साड़ीयाँ इसके अन्तर्गत आती है इसके निर्माण में जरी का प्रयोग किया जाता है अर्थात सोने चाँदी व ताँबे के महीन धागों का प्रयोग वस्त्र निर्माण में होता है। अजंता की गुफाओं से निकटता के कारण इन वस्त्रों में मुख्यत: बौद्धचित्र कला शैली का प्रभाव दिखाई देता है इसमें हंस कमल का फूल हाथी का अंकन मिलता है। इस तकनीक से निर्मित वस्त्रों के उदाहरण हैं. कर्नाटक की इल्काल साड़ी आंध्रप्रदेश की नारायण पैट तमिलनाडु की कांजीवरम एवं उत्तरप्रदेश की वाराणसी साड़ी।

TOPPER say's ATUL PHOTOSTAT IS THE MOST TRUSTED SHOP FOR IAS ASPIRANTS.....

बालूचरी तकनीक :-

यह भरी लगाने की 'तचौई' तकनीक पर आधारित है। बंगाल के मुर्शिदाबाद के बालूचर में बुनकरों ने इसे प्रारंभ किया। जो चीनी तकनीक से प्रभावित है। इसमें मंदिरों के कथानकों को अंकित किया जाता है। अर्थात् पौराणिक कथानक वस्त्रों पर अंकित किए जाते हैं। इस दृष्टि से इसे हिन्दू कला का रूप माना जाता है। साड़ी दुपट्टे, तौलिये में इसका अंकन प्रमुखता से मिलता है।

बांधेज / बांधनी तकनीक :-

इस निर्माण शैली में धागों को कई बिन्दुओं से बांध कर विभिन्न रंगों का प्रयोग करते हुए वस्त्र बनाए जाते हैं। राजस्थान एवं गुजरात में वस्त्र निर्माण की यह शैली अत्यन्त प्रसिद्ध है। आंध्रप्रदेश में इसे चित्का कहते हैं।

बाटिक तकनीक :-

यह कपड़ों पर छपाई की मुख्य तकनीक है। इसमें सांचे वाले लकड़ी के टुकड़ों का प्रयोग किया जाता है और रसायनों से धुले हुई रेशमी एवं सूती कपड़ों पर छपाई की जाती है। वैश्विक स्तर पर यह सर्वप्रथम इंडोनेशिया में प्रारंभ हुई। मध्यप्रदेश एवं पश्चिम बंगाल में वस्त्र

निर्माण के लिए यह तकनीक प्रसिद्ध है। इसी से जुड़ी हुई स्टैन्ड्र (गुजरात) की हीर तकनीक अत्यधिक प्रसिद्ध है इसमें रेशमी कपड़ों पर आकर्षक ज्यामिति आकृतियां बनाई जाती हैं।

प्रमुख वस्त्रों के नाम एवं उत्पादन केन्द्र

1. **कसूटी** – कर्नाटक में धागों के प्रयोग से बनाया गया एक कालरदार वस्त्र है।

2. **कानी** – यह कश्मीर की पश्मीना शॉल का रूप है।

3. **तुसुंगकोटेपसः** – यह नागालैण्ड में सैनिकों द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली शॉल है।

4. **नवलगुण्ड** :– यह तमिलनाडु में रेशम से बनने वाली दरी है।

5. **चंदेरी एवं महेश्वरी** :–
यह मध्यप्रदेश में साड़ी उत्पादन का प्रमुख केन्द्र है।

6. **सुआलकुची** :–
असम में रेशम उत्पादन का प्रमुख केन्द्र है।

7. **कलमकारी** :–
यह सूती वस्त्रों पर हाथ से बनाई जाने वाली कला है इसमें विभिन्न रंगों का प्रयोग कर वस्त्र

पर आकृति बनायी जाती है इसका विकास दक्षिण भारत में A P के मछलीपटनम में हुआ।

8. बोमकई :-
यह उड़ीसा की प्रमुख साड़ी है।

9. कवानिस :-
केरल में सुनहरे किनारे वाली साड़ी को कवानिस कहते हैं जिसे शुभ अवसर पर पहना जाता था।

10. जमावर :-
यह कश्मीर की शॉल है

11. बाफ्ता :-
यह रेशम के वस्त्र में सोने से की गई कशीदाकारी है।

12. फिरन :- यह कश्मीरी वस्त्र है जिसे स्त्री और पुरुष दोनो पहनते है। और यह अत्यन्त लंबा होता है।

13. चीवर :- साधु संयासी एवं भिक्षुओं के वस्त्र को चीवर कहते हैं।

14. जरदोजी :-
रेशमी सूती वस्त्रों पर सोने से की गई कढ़ाई को जरदोजी कहते हैं।

15. चिकन :- यह वस्त्रों पर कढ़ाई और कसीदकारी (सजावट) की शैली है। चिकन शब्द फारसी भाषा के चाकिन से बना है जिसका अर्थ कसीदकारी या बेल बूटे उभारना है इसे नूरजहां द्वारा विकसित किया गया।

16. **फुलकारी**:- पंजाब हरियाणा के क्षेत्र में अलंकृत वस्त्रों को फुलकारी कहते हैं।

17. **चंबा रूमाल**:- हिमाचल प्रदेश में मिलती है।

काँच निर्माण का कला:-

- प्राचीन काल में कांच निर्माण का आरंभिक साक्ष्य गंगा घाटी में मिलता है जिसका प्रयोग मनकों के निर्माण में किया जाता था।
- भारत में दक्षिण में ~~मध्यकालीन~~ ताम्रपाषाणकालीन स्थल मस्की से काँच के पुरातात्विक साक्ष्य मिले हैं।
- काँच की चुड़ियों के लिए हैदराबाद प्रसिद्ध है। जहाँ इसे चूड़ीकओदाब कहा जाता है। साथ ही उत्तर प्रदेश का फिरोजाबाद काँच निर्माण के लिए प्रसिद्ध है। इसीतरह उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में काँच से निर्मित बच्चों के खिलौनों को पंचकोरा कहा जाता है।

हाथी दाँत से निर्मित वस्तुएँ:

- प्राचीन काल में हड़प्पा सभ्यता के दौरान हाथी दाँत की वस्तुएं जैसे - पांसे, स्केल, कंघी आदि बनायी जाती थी।
- इसी तरह केरल हाथी दाँत पर चित्रकारी के लिए विख्यात है तो जोधपुर हाथी दाँत की

चूड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। जयपुर में घरों में उपयोग होने वाली हाथी दांत की जाली के काम के लिए प्रसिद्ध है।

* चर्म उत्पाद :-

- चर्म निर्माण का सबसे बड़ा बाजार राजस्थान है। यहां विभिन्न प्रकार के चर्म सामग्री के निर्माण के लिए ऊंट के चमड़े का प्रयोग किया जाता है।
- उत्तर प्रदेश में कानपुर भी चर्म उत्पाद के लिए माना जाता है।
- चमड़े पर कला की एक प्रमुख शैली बिकानेर से संबंधित है जिसे मनोती कला कहा जाता है। इसमें ऊंट की खाल के साथ सजावटी समान भी प्रयुक्त होते हैं।

* मृदभांड निर्माण

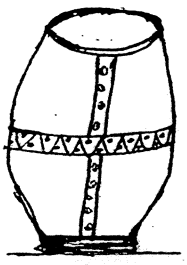

प्राचीन भारत में बर्तन निर्माण की परम्परा पाषाण काल में दिखाई देती है जिसके तहत धूसर, चित्रित मृदभांड, उत्तरी काले पालिशदार मृदभांड बनते थे। इन बर्तनों के निर्माण के मुख्यतः तीन तकनीक सामने आती है

1. चमक रहित मृदभांड :-

यह लोक निर्माण का उदाहरण है। यह बर्तन हाथों से निर्मित होते थे और साधारण होते थे।

२. चमकदार मृदभांड निर्माण :-

यह बर्तन पतली मिट्टी के परत से बनायी जाती थी और चाक पर निर्मित होते थे। इसमें प्रायः चित्रण भी होता था। इस तरह के मृदभांड प्राचीन भारत में उत्तरी काले पॉलिश दार मृदभांड के नाम से जाने जाते थे। जो अपेक्षा कृत मँहगे होते थे।

३. स्कारफिटो तकनीक :-

इसमें काले एवं लाल रंग का मिश्रण बनाकर मृदभांडों का निर्माण किया जाता था और इनके ऊपर चित्रकारी की जाती थी।

मृदभांडों का महत्व :-

- मृदभांड सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक विश्वासों को सूचित करते हैं मृदभांडों के निर्माण, कृषि के विकास एवं मानव के स्थायी जीवन को भी सूचित करता है मृदभांडों पर अंकित चित्र समाज के स्वरूप को उद्घाटित करता है इसी क्रम में मृदभांडों पर नारी मातृदेवी के रूप में अंकन मातृसत्तात्मक समाज को सूचित करता है।
- मृदभांडों के निर्माण में तकनीकी कुशलता समाज की वैज्ञानिक प्रगति को भी सूचित करती है। तो साथ ही मृदभांड सामाजिक आर्थिक विषमता को भी सूचित करते हैं वस्तुतः पॉलिशदार चमकदार मृदभांड समाज में उच्च वर्ग को

स्थिति को दर्शाते हैं। इन मृदभांडों में वस्तुओं को रखकर मानव के साथ दफनाए जाने से उनके इस धार्मिक विश्वास का पता चलता है कि वे पारलौकिक जीवन में विश्वास करते थे।

* चित्रकला

1. चित्रकला के तत्व
   - (i) रूपभेद / यथार्थवादी / रेखाप्रधानता
   - (ii) प्रमाण
   - (iii) भाव → भितरी सौन्दर्य
   - (iv) लावण्य → बाह्य सौन्दर्य
   - (v) सादृश्य योजना
   - (vi) वर्ण योजना

2. विकास ↓

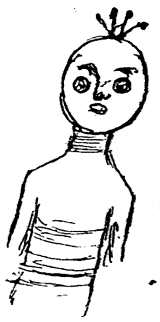

   पुरापाषाण काल
   - पूर्व पुरापाषाण
   - मध्य पुरापाषाण
   - उच्च ↓
     - आधुनिक मानव का विकास
     - कला के चित्रकला का विकास
       - • लौकिक जीवन पर बल
       - • मानव का अंकन
       - • मानवीय गतिविधियों की चित्रण
       - • अलंकरण / कृत्रिमता से दूर
     - आधुनिक चित्रकला के अन्तर्गत भी है]

3. क्षेत्रीय चित्रकला

* चित्रकला के तत्व :-

1. रूपभेद :-

किसी भी कलाकार की कृति उसपर अंकित आकृति को देखकर पहचानी जा सकती है। आकृति की रूप रेखा जितनी स्पष्ट होती है वह उतनी ही स्वाभाविक और सुन्दर मानी जाती है वस्तुतः रेखाओं के माध्यम से रूप भेद को स्पष्ट किया जाता है। इन्हीं संदर्भों में भारतीय चित्रकला को

रेखा प्रधानता कहते है। यदि चित्र में कोई स्त्री फूल चुनकर ला रही हो तो यह स्पष्ट होना चाहिए कि वह राजकुमारी है या दासी।

2. प्रमाण :-

किसी कलाकृति या वस्तु की विस्तारात्मक स्थिति को प्रमाण कहते हैं। प्रमाण के द्वारा ही हम मनुष्य एवं पशु पक्षी आदि की भिन्नता को जान सकते हैं। देवता और मनुष्य के चित्र में भेद कर सकते है।

3. भाव :-

कलाकृति की भंगीमा उसके स्वभाव एवं मनोभावों को व्यक्त करती है। भिन्न भिन्न भावों के अंकन से कलाकृति में भिन्न अभिव्यक्ति का समावेश हो जाता है जैसे लज्जा के लिए पलकों का झुकना तो खुशी एवं उल्लास के फूलों का खिलना जैसे भावों को दर्शाया जाता है। वस्तुतः करुणा, वियोग, अलज्जा, क्रोध जैसे भावों को कलाकृति से व्यक्त किया जाता है।

4. लावण्य :-

भाव जहां भितरी सौंदर्य का बोधक है वहीं लावण्य बाह्य सौंदर्य का। इससे चित्रों में सजीवता आती है जैसे वस्त्र की रूप रेखा और उनपर बनी सुन्दर आकृतियां लावण्य के लिए रखी जाती है।

5. सादृश्य योजना :-

किसी आकृति के भाव को दर्शाने के लिए दुसरे रूप की सहायता लेना सादृश्य योजना है जैसे कृष्ण को दर्शाने के लिए मोर पंख की योजना रखी जाती है।

वर्ण योजना :-

विभिन्न रंगों के माध्यम से चित्र को आकर्षक बनाने की योजना वर्ण योजना के नाम से जानी जाती है।

* विकास

1. प्रागैतिहासिक कालीन चित्रकला :-

भारत में कला के रूप में चित्र कला का विकास सर्वप्रथम पुरापाषाण काल के अंतिम चरण उच्च पुरापाषाण काल में हुआ। इस काल के चित्रकला के उदाहरण ~~मि~~ भीमबेटका एवं आदमगढ़ की गुफाओं में मिलता है। यहाँ बने चित्रों से स्पष्ट होता है कि

a) शिकार ही जीवन यापन का मुख्य साधन था।

b) चित्रकारों को स्त्री और पुरुष का भेद ज्ञात था

c) लोग समूह में रह रहे थे। तथा शेर कुत्ता हाथी जैसे पशुओं की मौजूदगी का पता चलता है।

भीमबेटका गुफा चित्रकला को राष्ट्रीय महत्व का स्थल घोषित किया गया है और यह Unesco की विश्व धरोहर स्थल सूचि में शामिल है वस्तुतः पाषाण कालीन इन गुफा चित्रों से आधुनिक चित्रकला की समानता देखी जा सकती है। आधुनिक चित्रकला में भी लौकिक विषयों का अंकन एवं मानवीय गतिविधियों को अंकित किया जाता है जहां अलंकरण और

कृत्रिमता से बचा जाता है तो साथ ही चित्रों में सहज सौंदर्य पर बल दिया जाता है। इस दृष्टि से पाषाण कालीन शुका चित्र भी आधुनिक चित्रकला से युक्त है क्योंकि वहां भी लौकिक जीवन एवं मानवीय गतिविधियों को अंकित किया गया और मानव समाज की समस्याओं एवं दिनचर्या को दर्शाया गया है।

2. हड़प्पा कालीन चित्रकला :-

हड़प्पा काल में कला के नमुने मुहरों एवं मृदभांड में मिलते है। यहां चित्रों में पशु एवं मानव के अंकन के साथ-साथ फुल पत्ती एवं ज्यामितीय प्रतीको का अंकन मिलता है। मोहनजोदड़ो से मिली मूहर से पशुपति शिव का अंकन मिलता है तो लोथल से मिले मृदभांड पर पंचतंत्र की चालाक लोमड़ी की कथा का अंकन मिलता है।

3. अजंता चित्रकला / बौद्ध चित्रकला :-

अजंता महाराष्ट्र के औरंगाबाद में स्थित है जेम्स एलेक्जेंडर ने 1824 में इन गुफाओं की खोज की। इसमें विभिन्न काल खण्ड की चित्रकला मिलती है वस्तुतः यहां दूसरी सताब्दी ईसा पूर्व से 7 सदी ई० तक की चित्रकला

मिलती है इसलिए यहाँ के चित्रों में विविधता नजर आती है।

- अजंता गुफा चित्रकला मुख्यतः भित्ति चित्रकला का उदाहरण है। यहाँ बुद्ध का जन्म, गृहत्याग, एवं धर्म उपदेश का चित्रण मिलता है तो साथ ही बोधिसत्व एवं जातक कथाओं का अंकन मिलता है।

- गुप्त काल में अजंता गुफा चित्रकला का पर्याप्त विकास हुआ। यहाँ गुफा संख्या 16 में मरनासन्न राजकुमारी का अंकन है जिसकी करुणा और वियोग की भावना अत्यंत दर्शनीय है। गुफा संख्या 17 को चित्रशाला कहा गया है। इसमें बुद्ध द्वारा गृहत्याग एवं यशोधरा तथा राहुल का चित्रण मिलता है।

- अजंता चित्रकला मुख्यतः बौद्ध धर्म से जुड़ी हुई है। इसकी दीवारों एवं छतों पर बनाए गए चित्र जातक कथाओं से लिए गए हैं गुफा में पद्मपाणि नामक बोधिसत्व का चित्रण है और दाहिने हाथ में पद्म पुष्प लिए हुए और शीर्ष पर बड़ा मुकुट धारण किए हुए तथा गले में सुंदर मोतियों वाला हार सौंदर्य है और शारीरिक संरचना में गतिशीलता अर्थात् भावों को दर्शाया गया है फलतः चित्र में त्रिआयामी प्रभाव दिखता है।

- इसी तरह अजंता गुफा में बुद्ध के द्वारा 'मार विजय' (असुर विजय) का दृश्य मिलता है।

PER says ATUL PHOTOSTAT IS THE MOST TRUSTED SHOP FOR IAS ASPIRANTS.....

इसमें बुद्ध को बोधि वृक्ष के नीचे त्याग मुद्रा में दिखाया गया है जहां वह अपनी सेना के साथ सिद्धार्थ को ज्ञान प्राप्त करने से रोकना चाहता है किन्तु बुद्ध इन सबसे विचलित हुए बिना ज्ञान प्राप्त करते हैं और इस ज्ञान प्राप्ति के लिए धरती को साक्षी बनाते हुए हाथ की अंगुली धरती पर रख देते हैं जिसे भूमिस्पर्शमुद्रा कहा जाता है

— अजंता गुफा में गुप्त काल में चित्र बनाने की एक नई तकनीक फ्रेस्को एवं टेम्परा का प्रयोग किया गया है। जिसके तहत दीवारों पर गिले प्लास्टर पर ही चित्र बनाकर रंग भर दिए जाते थे। इन रंगों में भूरे, काले, लाल रंगों का प्रयोग किया गया है। इस तरह अजंता के गुफा चित्रों में रेखा प्रधानता, प्रमाण, भावाभिव्यक्ति, वर्णयोजना जैसे चित्रकला के सभी तत्व मिलते हैं जो अजंता चित्रकला को श्रेष्ठ बनाते हैं।

4. बाघ की चित्रकला :-

मध्यप्रदेश में स्थित बाघ गुफा की चित्र कला लौकिक एवं धर्म निरपेक्ष कला का उदाहरण है यहां राजकीय झुलूस, नृत्य संगीत, हाथियों का समूह तथा शोकाकुल युवतियों का अंकन तथा विभिन्न पशु पक्षियों का अंकन मिलता है।

ATUL PHOTOSTAT

5. सितनवासल गुफा का चित्रकला

- तमिलनाडु में सितनवासल गुफा जैन चित्रकला के लिए जानी जाती है इसमें दीवारों के साथ साथ छतों एवं स्तम्भों पर भी चित्र बने है। ये चित्र पल्लव शासक महेन्द्रवर्मन-I के समय बने।

6. जैन चित्रकला :-

- जैन चित्रकला तीन रूप में मिलती है।
  - पट्ट चित्र (वस्त्र चित्र)
  - भित्तिचित्र (दीवारों पर)
  - ताड़ चित्र (पुस्तकचित्र)
- जैन चित्रकला की सर्वप्रमुख विशेषता ~~जैसे~~ नेत्र चित्र में है इसमें नेत्र बड़े बड़े कानों तक फैले हैं
- जैन चित्र में पृष्ठ भूमि प्रायः लाल रंग की होती है किन्तु ताड़पत्रों पर अंकित चित्रों पर प्रायः पीले रंग का प्रयोग किया जाता था
- सोने एवं चांदी की स्याही से चित्रों का निर्माण जैन शैली की खास विशेषता है इन चित्रों में बने स्वर्ण कमल एवं मुकुट उल्लेख नीय है
- चित्रों में चेहरे का भाव शून्य है इसलिए चित्र का अनुमान आकृति की मुद्राओं एवं

वहाँ लिखी गई कथाओं से लगाया जाता है जैन चित्रकला को पोथी (पुस्तक) चित्रकला के रूप में भी जाना जाता है और ये अपभ्रंश भाषा में लिखी गई पुस्तक है चित्रों में जैन तीर्थंकरों के साथ साथ चक्रेश्वरी देवी का भी अंकन मिलता है।

- जैन चित्रकला सच्चे अर्थों में लोक कला के रूप में दिखाई देती है इसे राजदरबार के विलासी जीवन एवं संरक्षण से मुक्त देखा जा सकता है।

17 July   * **मुगल चित्रकला**

1. विशेषताएं

- ईरानी कला के तत्व
  - राजदरबारी वैभव की चित्र
- राजपूत कला के तत्व
  - प्रकृति का चित्रण
- यूरोपीय प्रभाव
  - यूरोपीय विषयवस्तु जैसे - पँखवाले देवदूत मरियम, यीशु का चित्रण
  - छवि चित्रण
  - चित्रण की 3-D चित्रांकन

2. विकास

→ मोरक्का शैली

विशेषताएँ

- मुगल चित्रकला ईरानी, यूरोपी, एवं परम्परागत भारतीय चित्रकला के तत्वों से निर्मित हुई। इस काल में भित्ति चित्र, पट चित्र एवं पाण्डुलिपि चित्रण का विकास हुआ। वस्तुतः ईरानी कला के तत्व दरबारी चित्रण एवं शिकार के दृश्य तथा राजपूत कला के तत्व जैसे प्रकृति चित्रण पर बल एवं यूरोपीय चित्रकला के तत्व जैसे पंख वाले देवदूत, मरियम एवं येशु का अंकन तथा चित्रों का 3-D बनाया जाना उल्लेखनीय है। मुगल चित्रकला का आरंभ हुमायूँ के शासन काल में हुआ। हुमायूँ के शासन काल में ईरान के प्रसिद्ध चित्रकार अब्दुल समद एवं मीर सैयद अली मौजूद थे। अब्दुल समद ने चावल के दाने पर चौगान (पोलो) खेल का चित्रण किया।

- अकबर के काल में मुगल चित्रकला का पर्याप्त विकास हुआ और अकबर ने चित्रकला को दार्शनिक आधार प्रदान किया। अकबर के अनुसार चित्रकला ईश्वर को जानने का एक प्रमुख साधन है। वस्तुतः कोई भी चित्रकार कितना ही अच्छा चित्र बना ले किन्तु वह उसमें जीवन नहीं भर सकता। ऐसी स्थिति में उसे सीमाओं का ज्ञान होता है और वह उस सत्ता को जानने का प्रयास करता है जिसने इस सृष्टि का

TOPPER says ATUL PHOTOSTAT IS THE MOST TRUSTED SHOP FOR IAS ASPIRANTS.....

निर्माण किया है। और इसमें जीवन भरा है। इस तरह चित्रकला अपने ज्ञान को बढ़ाने और ईश्वर को जानने का एक सशक्त माध्यम है।

- अबुल फजल द्वारा लिखा गया अकबरनामा ग्रंथ में अकबर के काल के विभिन्न चित्रकारों के नाम तथा 100 से अधिक चित्र मिलते हैं।

- अकबर के काल में ईरानी कला के तत्व दिखाई पड़ते हैं। ईरानी कला के अन्तर्गत 'हेरात कला' प्रसिद्ध है। हेरात अफगानिस्तान में एक प्रमुख स्थल है जो ईरान के प्रसिद्ध चित्रकार बिहजाद का कार्य स्थल था। इस चित्रकला के तहत दरबारी शान-व-शौकत एवं बादशाह के रुचियों का अंकन किया जाता था।

- अकबर के काल में बने चित्रों में प्रतिदिन प्रयोग में लाये जाने वाले भारतीय परिधानों, प्रकृति का चित्रण एवं दरबार का चित्रण किया जाता था।

- अकबर ने लघु चित्रकला के तहत छोटे आकार के चित्र बनवाएँ।

लघु चित्र कला :- (Miniature)

लघु चित्रकला के तहत बने हुए चित्र 25 वर्ग इंच से बड़े नहीं होने चाहिए तथा चित्रों का विषय वास्तविक आकार से छोटा होना चाहिए। अधिकांश भारतीय लघु चित्रों में मानव आकृति और उसकी

ATUL PHOTOSTAT

उभरी हुई आंखें दर्शायी जाती हैं।

- अकबर की चित्रकला पर यूरोपीय चित्रकला का निम्नलिखित प्रभाव दिखाई पड़ता है -
  i) व्यक्ति विशेष का चित्रण करना।
  ii) दृश्य में आगे दिखने वाली वस्तुओं को हल्के आकार में बनाना।
  iii) आलोचना एवं व्यंग्य के विषय को चित्रित करना।

- अकबर के चित्रकला पर राजपूत चित्रकला का प्रभाव भी दिखाई देता है जो निम्नलिखित है -
  (i) - गहरे नीले तथा लाल रंग का अत्यधिक प्रयोग करना।
  (ii) चित्र में उड़ते हुए गीत गाते पक्षियों का अंकन करना
  (iii) पीले ब्रश के बजाय गोल ब्रश का प्रयोग करना।

अकबरकालीन प्रमुख चित्रकार :-

(i) दसवंत :- यह अकबर कालीन सर्वश्रेष्ठ चित्रकार था इसने 'रज्मनामा' का चित्रण किया। जिसके तहत महाभारत के कथानक को चित्रित किया गया।

(ii) बसावन :- यह रंग का चित्रकार था। इसकी कला कृति में मंजनू को कृशकाय घोड़े के साथ निर्जन क्षेत्र में भटकते हुए दर्शाया गया।

जहाँगीर कालीन चित्रकला :-

- जहाँगीर ~~चित्रकला~~ का स्वयं बड़ा जानकार था। इसने अकारिजा के नेतृत्व में आगरा में चित्रशाला विभाग की स्थापना की।
- इसकी चित्रकला में रूपवादी शैली की प्रधानता मिलती है। इसके चित्रों में प्रकृति के तत्वों का अत्यधिक अंकन मिलता है। अर्थात यह प्रकृतिवादी था और वनस्पतियों एवं जीवों जैसे फूल वृक्ष पशु पक्षी के अंकन पर बल देता था। तो साथ ही चित्रों में शिकार, युद्ध एवं दरबार का दृश्य भी अंकित मिलता है।
- अकबर कालीन लघु चित्रकला की परम्परा को इसने बनाए रखा। जहाँगीर के समय यूरोपीय प्रभाव से पंख वाले देवदूत एवं मरियम का चित्रण किया गया है तथा चित्र कला में मोरक्का शैली [अलंकृत हाशिये] का प्रचलन हुआ और छवि चित्रण पर बल दिया गया। जहाँगीर का काल मुग़ल चित्रकला का स्वर्ण काल माना जाता है।

जहाँगीर कालीन प्रमुख चित्रकार

(i) मंसूर :- यह पशु पक्षियों का चित्रकार था। इसके चित्र रंगों की सूक्ष्म समझ को सूचित करते हैं। 'लाल फूल' ओर्किड ~~चीन~~ चित्र मंसूर

द्वारा बनाया गया सर्वश्रेष्ठ चित्र माना जाता है।

अबुल हसन :-

इसमें सिंहासन पर बैठे जहांगीर का चित्र बनाया जिसे जहांगीर की आत्मकथा तुजुग-ए-जहांगीरी के मुख्य पृष्ठ पर अंकित किया गया।

बिसनदास :-

इसे जहांगीर ने ईरानी दरबार में चित्रण के लिए भेजा।

दौलत :- यह अपने साथी चित्रकारों का चित्र बनाता था।

शाहजहां कालीन चित्रकला :-

शाहजहां के काल में चित्रकला के विकास में कृत्रिम तत्वों का प्रयोग बढ़ा वस्तुतः पूर्व के प्रकृतिवादी चित्रण की जगह अब कृत्रिम तत्वों की रचना का प्रयोग बढ़ा वस्तुतः उसने चित्रों में सोने एवं चांदी के प्रयोग पर अत्यधिक बल दिया।

* क्षेत्रिय चित्रकला

दक्षिनी चित्रकला :-

दक्कन के बीजापुर के शासक इब्राहिम आदिल शाह के समय चित्रकला का अत्यधिक विकास हुआ वह स्वयं एक प्रसिद्ध

चित्रकार था चित्रकारों ने आभूषणों का अत्यधिक चित्रण किया। विशेषकर बालों के हार का। इसके समय 'रागमाला चित्रकला' की परम्परा विकसित हुई।

रागमाला चित्रकला के तहत भारत की विभिन्न ऋतुओं का अंकन किया जाता है जिसके तहत 'बारहमासा' के माध्यम से मानवीय भावों को दर्शाया जाता है साथ ही चित्रों में नायक-नायिका अंकन करते हुए विशेष रागों का अंकन किया जाता है। जैसे :- राग मेघ, दीपक, भैरव आदि का अंकन।

* राजपूत चित्रकला / राजस्थानी चित्रकला

- प्रकृति चित्रण
- धर्म + साहित्य + संगीत का मिश्रण (त्रिवेणी)

धर्म	साहित्य	संगीत
राधा-कृष्ण	केशवदास की 'रसिकप्रिया' का चित्रण	राग → मेघराग, दीपक वाद्ययंत्र → ढोलक, बाँसुरी

* धार्मिक नायक का मानवीयकरण एवं मानव का सामान्यीकरण।
  - कृष्ण की रासलिला
  - सामान्य मानव का अंकन → झूलाहे, ग्वाले, बढ़ई

विशेषताएँ :-

- राजपूत चित्रकला में प्रकृति का चित्रण, गीत गाते पक्षी, उछलते कूदते पशु तथा रंगों की बहुलता मिलती है। प्राकृतिक दृश्यों में काले बादल बिजली की चमक बाढ़ का दृश्य चित्रित किया गया है। साथ ही शिकार का दृश्य भी अंकित मिलता है।

- चित्रकारों ने बांसुरी वादक कृष्ण नायक - नायिका ग्रामीण जीवन एवं पौराणिक कथाओं का चित्रण किया है। इस तरह प्रकृति साहित्य एवं संगीत चित्रकला के विषय बन गए। वस्तुतः केशवदास द्वारा रचित रसिकप्रिया काव्य में अंकित नायक-नायिका के प्रेम के कथानक को चित्रित किया गया। इसी तरह दीपक राग का चित्रण करते हुए चित्रकारों ने जलते हुए दीपक बनाए और मेघराग का चित्रण करते हुए वर्षा ऋतु का अंकन किया।

- राजस्थानी चित्रकला शैली में भक्ति भाव भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है जहाँ कृष्ण भक्ति के चित्र बने राधाकृष्ण के साथ साथ विभिन्न सामाजिक वर्गों और ~~निर्धन~~ कर्ता समूह जैसे बढ़ई, जुलाहा, ग्वाले का भी अंकन मिलता है। इस तरह यहाँ धार्मिक नायक का मानवीयकरण और मानव का सामान्यीकरण मिलता है इस दृष्टि से राजपूत चित्रकला

धर्म साहित्य एवं संगीत की त्रिवेणी के रूप में दिखाई देती है।

विभिन्न शैलियाँ

1. मेवाड़ कलम (शैली):-

यह राजस्थानी शैली का प्राचीनतम केन्द्र है। इसके चित्र प्रायः कृष्ण भक्ति विषयक वैष्णव धर्म से संबंधित है। इसमें लोक संस्कृति का चित्रण विवाह, नृत्य गान का चित्रण मिलता है। मेवाड़ का निसारदीन घराना इस शैली का प्रमुख संरक्षण कर्ता है।

2. किसनगढ़ कलम:-

इसमें राधाकृष्ण एवं कृष्ण की विविध लीलाओं का चित्रण मिलता है। महाराजा सांवतसिंह इसके संरक्षणकर्ता थे। इनके दरबार में निहालचन्द्र एक प्रसिद्ध चित्रकार था। जिसने बनी-ठनी नामक कलाकृति बनाई इसे राजस्थान की मोनालिसा भी कहा गया। इसमें मोतियों एवं हीरों के आभूषणों का चित्रण किया गया है।

3. बूंदी कलम:-

इस शैली के तहत स्त्री आकृतियाँ मुख्यत: लम्बी एवं दुबली पतली बनायी जाती हैं तथा नोकदार नासिका का अंकन किया जाता है।

4. कोटा कलम :-

इसमें मुख्यत: शिकार के दृश्य बनाए गए है। राजा उम्मेद सिंह इसके संरक्षक थे। इस कला शैली में हाथियों के लड़ाई का सुन्दर चित्र बना हुआ है।

(ii) पहाड़ी चित्रकला

पंजाब की पहाड़ी रियासतों में राजपूत चित्रकला शैली नये रूपों में प्रकट हुई और पहाड़ी चित्रकला के नाम से जानी गई। वस्तुत: नादिर शाह एवं अहमद शाह अब्दाली के आक्रमण के पश्चात् मुगल एवं राजपूत कला के कलाकारों ने पहाड़ो में शरण ली और कांगड़ा बसौली कला के प्रमुख केन्द्र के रूप में सामने आये।

कांगड़ा शैली :-

कांगड़ा रियासत में महाराजा संसारचंद के समय चित्रकला का पर्याप्त विकास हुआ इस कला के मूल में राजपूत शैली के तत्व दिखाई देते है चित्रों में प्रमुखता से पौराणिक कथाओं एवं उनके नायक नायिका का अंकन मिलता है मुख्य रूप से स्त्री आकृतियां प्रभावशाली है इसमें आंखें धनुषाकार एवं प्राकृतिक दृश्यों में

रंग बिरंगे फूल पहाड़ियां एवं शैव तथा वैष्णव अंकन मिलता है। इन चित्रों में बारहमासा का अंकन मिलता है जिसमें कलाकारों ने मनुष्य की भावनाओं पर बारह महिनों के प्रभाव को दर्शाने का प्रयास किया।

बसौली शैली :-

जम्मु क्षेत्र में स्थित बसौली पहाड़ी चित्रकला का प्रमुख केन्द्र है। इस शैली के अन्तर्गत हाथ की मुद्राओं का आकर्षक चित्र मिलता है तथा साथ ही नेत्र चित्रण भी आकर्षक है। कांगड़ा शैली की अपेक्षा यहां अधिक रंगीन चित्र मिलते हैं। इस शैली के प्रमुख संरक्षक राजा कृपाल सिंह थे। इनके काल में देवीदास प्रमुख चित्रकार था।

(iii) पटना कलम (कंपनी शैली)

- पटना चित्रकला शैली :-

- ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन में पटना कला शैली का विकास हुआ। वस्तुतः कम्पनी द्वारा बंगाल में राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के साथ ही 18-20वीं सदी के बीच पटना कला शैली का विकास हुआ इस शैली के कलाकार यूरोपीय मुगल एवं पहाड़ी कला के तत्वों से परिचित थे। यह

बिना किसी राजाश्रय के विकसित हुई अर्थात् दरबारी संरक्षण से मुक्त थी। इसके संरक्षक एवं खरीददार तत्कालीन धनी व्यापारी तथा भारतीय ब्रिटिश कला प्रेमी थे।

पटना कलम के चित्र कागज एवं हाथी दांत की सामग्री पर बनाए गए। इनकी विषय वस्तु दरबारी कला न होकर लोक कला थी। चित्रों में श्रमिक वर्ग, शिल्पकार, बाजार के चित्र जैसे मछली की दुकान, मिठाई की दुकान, त्यौहारों का अंकन, पाठशाला का अंकन एवं दाह संस्कार केन्द्रों का अंकन मिलता है। चित्रों में विशेष रूप से ~~[illegible]~~ चिड़ियों का अंकन उल्लेखनीय है चित्रों पक्षियों का एक-एक पंख का स्पष्ट चित्रण किया गया है कि यह कलाकारों के पक्षी शरीर ज्ञान की गहन जानकारी को सूचित करता है।

– पटना कला शैली के प्रमुख चित्रकार महादेव लाल है जिन्होंने - रागिनी गंधारी शीर्षक चित्र प्रसिद्ध है तो यमुना प्रसाद द्वारा बेगमों की शराबखोरी का प्रसिद्ध चित्र है।

(iv) मधुबनी चित्रकला :-

मधुबनी चित्रकला बिहार की लोक संस्कृति को प्रदर्शित करती है। यह मिथिलांचल क्षेत्र जैसे- मधुबनी दरभंगा सहरसा आदि जिलों के लोक जीवन की कला है। और इसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती प्राप्त है। इन चित्रों को जन्म विवाह एवं त्यौहार जैसे स शुभ अवसरों पर निर्मित किया जाता था। इस कला के तीन रूप मिलते हैं।

1. भित्ति चित्र :-

इसके तहत घर की दीवारों की सजावट धार्मिक चित्रों के माध्यम से की जाती है। इसमें राधाकृष्ण शिव-पार्वती लक्ष्मी-विष्णु का अंकन मुख्य रूप से होता है। यह भित्ति चित्र घर के अंदरूनी कक्ष (कोहबर) की दीवारों पर एवं उसके कोनों पर अंकित किए जाते हैं। इनमें पशुपक्षी का चित्र भी अंकित होता है जैसे सिंह का चित्र शक्ति का प्रतीक है तो हाथी एवं घोड़ा ऐश्वर्य का तथा सूर्य एवं चन्द्र दीर्घायु का प्रतीक है।

2. अरिपन (भूमि चित्र) :-

यह घर के अंगान या चौखट के सामने बनाया जाता है इसमें पीसे हुए चावल पानी एवं विभिन्न वानस्पतिक रंगों को मिलाकर चित्र बनाया जाता है। चित्र मुख्यतः मनुष्य पशु-पक्षी, देवी-देवता, पेड़ पौधे तथा दीपक

के बनाए जाते हैं।

3. <u>पट्ट चित्र (वस्त्रों पर चित्र):-</u>

इसके तहत बने चित्र किसी व्यक्ति के शारीरिक सौंदर्य पर बल देने के बजाए बल्कि उसके अंतर को अंकित करने के लिए बनाए जाते हैं चित्र मुख्यतः बाँस की तूलिका या अंगुलियों के माध्यम से बनाये जाते हैं और चमकीली सज्जा प्रदान करने का प्रयास किया जाता है।

मधुबनी कला एक विशिष्ट भूभाग तक ही सीमित रही इसलिए इसे भौगोलिक संकेत की प्रतिष्ठा प्रदान की गई है।

<u>मंजूषा कला :-</u>

यह बिहार के भागलपुर क्षेत्र की लोककथा में प्रचलित बिहुला विसहरी की कथानक पर आधारित है। इसमें मुख्यतः नाग के चित्र बनाए जाते हैं। इन चित्रों की खास विशेषता यह है कि इसमें स्त्री पुरुष के चेहरे का केवल बायाँ भाग ही दर्शाया जाता है। इसे 'अंगिका कला' भी कहते हैं। [प्राचीन काल में अंग एक महाजनपद था अतः इस स्थान से जुड़ा होने कारण इसे अंगिका कला कहा गया]

* बंगाल कला केन्द्र :-

कम्पनी शासन के साथ ही चित्र कला के केन्द्र के रूप में बंगाल कला केन्द्र की स्थापना हुई। बंगाल कला केन्द्र को आरंभ करने का श्रेय ई. बी. हैवेल को दिया जाता है जो कलकत्ता कला विद्यालय के प्राचार्य थे। इसमें साधारण बंगाली का प्रयोग किया जाता है। हैवेल की प्रेरणा से अवीन्द्रनाथ टैगोर ने पाश्चात्य एवं स्वदेशी (अजन्ता एवं मुगल चित्रकला) कला का मिश्रण करते हुए चित्र बनाए। इन चित्रों को हाकुर शैली के चित्र भी कहा गया। इनके द्वारा बनाए गए चित्रों में भारत माता, बुद्ध का जन्म नामक चित्र उल्लेखनीय है। इनके शिष्य नंदलाल बोस एक राष्ट्रवादी चित्रकार थे जिन्होंने प्राचीन विषयों को चित्रकला का आधार बनाया। इन्होंने सती, विषपान करते हुए शिव, दाण्डीमार्च का चित्र बनाया। स्वदेशी आंदोलन के दौरान चित्रकला के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया और छात्रवृत्ति भी प्राप्त की। स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने इन्हें पद्म भूषण पुरस्कार दिया।

- बंगाल के जामिनी राय एक प्रमुख तैल चित्रकार (Oil painter) थे जिन्होंने कम रेखाओं का प्रयोग किया। इसी तरह अमृता शेरगील

ने तैलचित्र कला के माध्यम से पंजाबी किसान महिलाओं के परिवेश को चित्रित किया। 'नारी' उनका उल्लेखनीय चित्र है।

अन्य :- मदुरै के अलाग्रीनायडू एवं त्रावणकोर के राजा रवि वर्मा एक प्रसिद्ध चित्रकार रहे। नायडू रवि वर्मा के गुरू थे।

- पैटकार चित्रकारी झारखण्ड के आदिवासियों द्वारा बनाई गई चित्रकला है।
- कालीघाट चित्रकारी कोलकता के ग्रामीण लोगों द्वारा निर्मित की जाती है।
- कलमकारी चित्रकला यह दक्षिण भारत के आंध्र प्रदेश के मछलीपट्टनम में प्रचलित है और सूती वस्त्र पर अंकित की जाती है।
- वरली चित्रकला महाराष्ट्र की चित्रकला के नाम से जानी जाती है वस्तुतः गुजरात महाराष्ट्र के सीमा पर रहने वाले वरली लोगों द्वारा बनाई गई चित्रकला है जो भीमबेटका के गुफाओं में बने भित्ति चित्रों से प्रभावित है।

- थंगका चित्रकला सिक्किम में प्रचलित है यह मूलतः बौद्ध धर्म से जुड़ी हुई है और सूती कपड़े पर बनाई जाती है।

* नृत्य कला

दो रूप

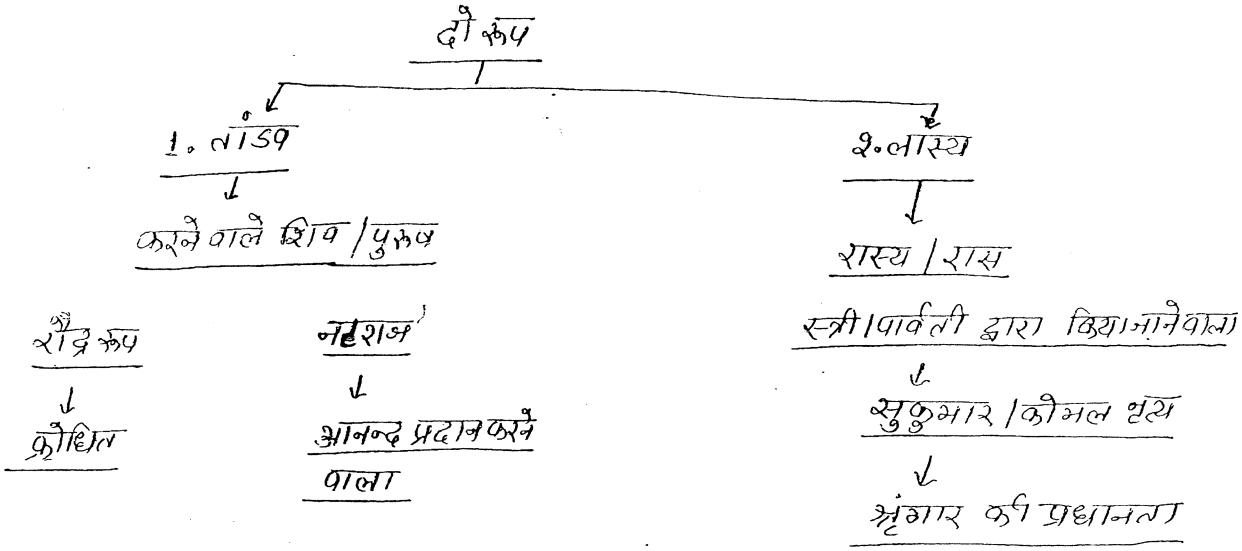

- 1. तांडव
  - करने वाले शिव / पुरुष
    - रौद्र रूप → क्रोधित
    - नटराज → आनन्द प्रदान करने वाला
- 2. लास्य
  - लास्य / रास
  - स्त्री / पार्वती द्वारा किया जाने वाला
  - ↓ सुकुमार / कोमल नृत्य
  - ↓ श्रृंगार की प्रधानता

नृत्य:- भारतीय नृत्य का विकास धर्म और दर्शन से जुड़ा हुआ है माना जाता है कि संसार में बढ़ते क्रोध ईर्ष्या और दुख को देखते हुए ब्रह्मा ध्यानमग्न हुए और नाट्य संगीत की रचना की इस तरह नृत्य ईश्वर और मनुष्य के आपसी प्रेम को दर्शाता है।

- भरत मुनि के नाट्य शास्त्र में नृत्य नाटक और संगीत का उल्लेख मिलता है।
- भारतीय नृत्यकला के शास्त्रीय रूप के दो अंग माने गये हैं। एक ताण्डव और दूसरा लास्य।

- ताण्डव का एक रूप उग्र होता है और इसे करने वाले शिव रौद्र कहलाये जबकि दूसरा रूप आनन्द प्रदान करने वाला होता है और इसे करने वाले शिव नटराज के रूप में जाने गए। ताण्डव नृत्य मुख्यतः पुरुष द्वारा किया जाता है और उग्र नृत्य के रूप में इसकी पहचान है जबकि लास्य एक कोमल नृत्य के रूप में पार्वती अर्थात् स्त्री के माध्यम से किया जाता है। इसमें लालित्य (श्रृंगारिकता) की प्रधानता होती है। भरतमुनि ने नाट्य शास्त्र में स्त्री एवं पुरुष के लिए तांडव उपयुक्त बताया है।

<u>नटराज शिव :-</u>

भारतीय संस्कृति में शिव की वंदना अनेक रूपों में की गई है जिसमें उनका नटराज रूप उल्लेखनीय है नटराज की मुद्रा में नृत्य करते हुए शिव तथा उनकी भुजाएँ प्रतीकात्मक अर्थ लिए हुए हैं। उनके चारों ओर अग्नि का एक घेरा है एक पांव से राक्षस को दबाए हुए है तो दूसरा पाव नृत्य की मुद्रा में ऊपर उठा है। ऊपर के एक हाथ में डमरू पकड़े हुए है। यह ध्वनि सृजन के प्रतीक है तो दूसरे हाथ में अग्नि है जो विनाश का प्रतीक है। एक अन्य हाथ अभयमुद्रा में उठा हुआ है जो बुराईयों से रक्षा करता है। इस तरह शिव का सृजनकर्ता संहारक एवं दाहक का रूप

रूप यहाँ मिलता है। नटराज के इस नृत्य को नदान्त नृत्य भी कहते है। वस्तुतः सबसे पहले स्वरों की उत्पत्ति डमरू से निकली मानी जाती है।

- नटराज के हाथ में मौजूद अग्नि का एक तात्पर्य यह भी है कि मन की बुराइयों को दूर करने के लिए संकल्प रूपी आग को सदैव जलाए रखना चाहिए यह अग्नि (संकल्प) सभी बुराईयों को दूर करके अच्छाईयों को अंदर बढ़ाने का कार्य करती है। तो साथ ही पाव के नीचे कुचला हुआ दानव अज्ञान का प्रतीक है जिसे शिव द्वारा नष्ट किया जाता है। इस तरह नटराज शिव अज्ञान का विनाश कर ज्ञान का प्रसार करते है। इस दृष्टि से वे एक शिक्षक के रूप में देखे जा सकते हैं।

* शास्त्रीय नृत्य

भरत मुनि के नाट्य शास्त्र में वर्णित आधारभूत नियमों तथा दिशा निर्देशों के अनुसार संचालित होने वाला नृत्य शास्त्रीय नृत्य की कोटि में रखा जाता है। इसमें यही माना जाता है कि ज्ञान का हस्तानांतरण केवल गुरु के माध्यम से हो सकता है यह गुरु शिष्य परम्परा भारत की शास्त्रीय नृत्य कला शैली का मुख्य तत्व है

इस आधार पर आठ शास्त्रीय नृत्य माने गए हैं।

(i) भारतनाट्यम :-

यह तमिल संस्कृति का एकल नृत्य है। तमिल में नाट्यम का अर्थ नृत्य होता है। यह मंदिर की नर्तकियों या देवदासियों द्वारा किया जाता था देवदासी प्रथा से संबंधित होने के कारण इसे सम्मान प्राप्त नहीं था किन्तु 20वीं सदी में रुक्मणि देवी के प्रयासों से इसे पर्याप्त सम्मान मिला।

- भरत नाट्यम में नृत्य और अभिनय सा शामिल होता है इस नृत्य में मुख्यतः शारीरिक भंगिमा पर विशेष बल दिया जाता है। इस नृत्य को अग्नि नृत्य के नाम से भी जाना जाता है वस्तुतः भरतनाट्यम में अधिकांश मुद्राएं लहराती हुए आग की लपटों की समान दिखाई देती है।
- इस नृत्य का आरंभ अलारिपु से होता है जिसका अर्थ फूलों से सजावट करना है। तथा नृत्य का अंत तिल्लाना से होता है।
- भरतनाट्यम नृत्य के संगीत वाद्य मंडल में एक गायक, एक बांसुरीवादक, एक मृदंगम वादक एक वीणा वादक तथा एक करताल वादक होता है।
- भरतनाट्यम नृत्य का संबंध नटराज की मूर्ति से जोड़ा जाता है इसके प्रमुख कलाकार है - यामिनी कृष्णमूर्ति, मृणालिनी साराभाई,

२. कूचिपुड़ी (मटका नृत्य / थाल नृत्य)

- यह शास्त्रीय नृत्य आंध्रप्रदेश के कुचेलपुर ग्राम से संबंधित होने के कारण कूचिपुड़ी कहलाया। यह गीत एवं नृत्य का समन्वित रूप है। भागवत पुराण इसका प्रमुख विषय है। अतः इसके मुख्य पात्र भागवतमेला कहलाते हैं।
- कूचिपुड़ी नृत्य में पद संचालन एवं हस्तमुद्राओं का विशेष महत्व है और इसमें श्रृंगार रस की प्रधानता होती है।
- कूचिपुड़ी नृत्य की खास विशेषता, पीतल के थाल पर नर्तकियों द्वारा पैर रख कर नृत्य क्रिया जाना है। जहां सिर पर जल से भरे हुए कलश होते थे। नृत्य के इस रूप को तरंगम कहा जाता है।
- कूचिपुड़ी नृत्य की एक विशेषता यह है कि नृत्य करते समय कलाकार पैर के अंगुठे से फर्श पर एक काल्पनिक आकृति बनाते जाते हैं और किसी कथानक को प्रकट करता है। नृत्य के इस रूप को भामा चित्र नृत्यम् कहा जाता है।
- इस नृत्य में विजय नगर साम्राज्य में विकसित हुई नृत्य की यक्षगान परम्परा शामिल है।
- कूचिपुड़ी नृत्य के प्रमुख कलाकार - यामिनी कृष्णमूर्ति एवं राधा रेड्डी।

TOPPER says ATUL PHOTOSTAT IS THE MOST TRUSTED SHOP FOR IAS ASPIRANTS.....

3. कथकली :-

- केरल के मंदिरों में शास्त्रीय नृत्य की यह शैली विकसित हुई वस्तुत: केरल के स्थानीय लोक नाटक कुडिअट्टम तथा कृष्णाअट्टम इसके प्रेरणास्रोत रहे। इसमें मूलत: पौराणिक कथानकों को शामिल किया गया है।
- कथकली मुख्यत: पुरुष नृत्य होता था किन्तु रागीनि देवी ने पुरुषों के एकाधिकार को तोड़ा। पुरुष प्रधान नृत्य होने कारण स्त्री पात्र के नृत्य भी पुरुष ही करते थे।
- कथकली नृत्य में नेत्र एवं भौहों का संचालन सबसे महत्वपूर्ण है।
- नृत्य में रामायण एवं महाभारत के प्रसंगों को दर्शाया जाता है अत: इसे पूर्व का गाथागीत भी कहते हैं। इसमें संगीत एवं अभिनय का मिश्रण होता है।
- कथकली नृत्य में दो प्रकार के पात्र होते है-
  पाचा - नायक
  कैटी - खलनायक

नर्तक के चेहरे पर हरा एवं लाल रंग लगा होता है जो अलग अलग चरित्र के सूचक है। हरा रंग सद्गुण, ईश्वर और मर्यादा का सूचक है जो लाल रंग पाप का सूचक है। इस तरह कथकली अच्छाई और बुराई के बीच चलने वाले संघर्ष को व्यक्त करता है। तथा ताण्डव नृत्य का

ATUL PHOTOSTAT

प्रतिबिम्बित करता है

- कथकली के प्रमुख कलाकार -
  गुरु कुंचु कुरुप, रीता गांगुली और कृष्णाकुट्टी

4. मोहनीअट्टम :-

- यह केरल का प्रमुख नृत्य है और महिलाएँ इनका प्रदर्शन करती हैं। 19वीं सदी में त्रावणकोर के राजा स्वाति तिरुनल के काल में इसका पर्याप्त विकास हुआ माना जाता है कि भस्मासुर वध के लिए विष्णु द्वारा मोहनी रूप धारण करने की कथा से इसका विकास हुआ

- मोहनीअट्टम में भरतनाट्यम एवं कथकली दोनों का अंश पाया जाता है भरतनाट्यम की श्रृंगारिकता तथा कथकली वीरता का भाव इसमें शामिल है

  इसके प्रमुख कलाकार - कल्याणी अम्मा
  वैजयंती माला
  हेमा मालिनी

5. ओडिसी :-

यह शास्त्रीय नृत्य उड़ीसा में प्रचलित है वस्तुत: प्राचीन काल में ईसापूर्व दूसरी सताब्दी में एक महरिस नामक सम्प्रदाय था जो शिव मंदिरों में नृत्य करता था आगे चलकर इसी से ओडिसी नृत्यकला का विकास हुआ।

- 12वीं सदी में इस नृत्य पर वैष्णव धर्म का व्यापक प्रभाव पड़। और जयदेव के लिखे गए पद्य इस नृत्य के अभिन्न अंग बन गए। इस नृत्य में भगवान जगन्नाथ को मुख्य केन्द्र बनाया गया और उनके प्रति भक्ति व्यक्त की गई।

- ओडिसी नृत्य में विभिन्न स्थ शारीरिक मुद्राओं का जो प्रयोग किया जाता है वह भरतनाट्यम से मिलती जुलती है। इसमें शरीर की त्रिभंगी मुद्रा अर्थात शरीर को तीन स्थानों से मुड़ी हुई मुद्रा से दर्शाया जाता है। इस ओड़िसी नृत्य में कलाकार अपने शरीर से जटिल आकृतियों का निर्माण करते है। इसलिए इसे चलती फिरती वास्तुकला का भी नाम दिया गया। इसके प्रमुख कलाकार है -

संयुक्ता पाणिग्रही, इन्द्राणी रहमान

6. मणिपुरी नृत्य :-

यह पूर्वी बंगाल एवं असम की नृत्य शैली है मणिपुर में विशेष लोकप्रिय होने के कारण इसे मणिपुरी नृत्य कहा जाता है। इसमे भक्ति पर विशेष बल है। नृत्य में तांडव एवं लास्य दोनों का समावेश होता है। इस नृत्य की आत्मा ढोलक है। इसमें नर्तक घुंघरु नहीं बांधते और शारीरिक मुद्राओं का प्रयोग सीमित होता है।

रविन्द्र नाथ टैगोर इस नृत्य से बेहद प्रभावित थे अतः वे दक्ष नर्तक को शिक्षक के रूप में शांति निकेतन ले आये तब से समस्त भारत में इसका प्रसार हुआ। इसके प्रमुख कलाकार है- झावेरी बहनें, रंजना एवं दर्शना आदि।

मणिपुरी नृत्य के प्रकार :-

(i) अगोई तांडव :-

इसमें नर्तक ऊँचे कूद कूद कर चक्कर लगाकर नृत्य करता है। यह, कृष्ण द्वारा अपने सखाओं के साथ नृत्य करने पर आधारित है।

(ii) चोलम तांडव :-

इसके तहत खरताल नृत्य (ड्रम बजाकर) नृत्य किया जाता था। इसमें नर्तक झुककर नृत्य करता था।

(iii) थांगटा नृत्य :-

इसमें युद्ध संबंधी दृश्यों का प्रदर्शन किया जाता था।

7. कथक :-

उत्तर प्रदेश की ब्रज भूमि की रासलीला परम्परा से जुड़ा हुआ है। इस नृत्य के केन्द्र में राधा कृष्ण की अवधारणा मौजूद है कथक का नाम कथिका अर्थात् कहानी कहने

वाले से निकला है जो महाकाव्यों के प्रसंगों का वर्णन संगीत एवं शारीरिक मुद्राओं से किया करते थे। इस नृत्य को शिखर पर पहुँचाने का श्रेय अवध के नवाब वाजिद अली शाह को दिया जाता है। इसके काल में ठाकुर प्रसाद प्रसिद्ध नर्तक थे जिन्होंने नवाब को नृत्य सिखाया।

- ठाकुर प्रसाद के तीन पुत्रों बींदादीन, भैरव प्रसाद एवं कालका प्रसाद ने कथक को लोकप्रिय बनाया। तो कालका प्रसाद के तीन पुत्रों लच्छू महाराज, शंभू महाराज और अच्छन महाराज ने पारिवारिक शैली को आगे बढ़ाया। तो अच्छन महाराज के पुत्र बिरजू महाराज ने कथक को शिखर तक पहुँचाया।

- कथक की खास बात इसके पद संचालन एवं घिरनी खाने में है। इस नृत्य में घुटनों को नहीं मोड़ा जाता। इस नृत्य को ध्रुपद एवं ठुमरी गायन से व्यक्त किया जाता है। कथक के अन्तर्गत विभिन्न घरानों का विकास हुआ जैसे लखनऊ, बनारस आदि।

8. सत्रिया नृत्य :-

यह असम की नृत्य शैली है। इसके विकास में 15वीं सदी के शंकर देव की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वस्तुतः असम के महान वैष्णव संत शंकर देव ने सत्रिया नृत्य को वैष्णव धर्म के प्रचार हेतु एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में अपनाया। शंकर देव ने अंकियानट (नाटक) के प्रदर्शन के लिए इसे विकसित किया। इसमें पौराणिक कथाओं का समावेश होता है और पुरुषों द्वारा किया जाता है।

— सत्रिया नृत्य में शंकर देव द्वारा संगीतबद्ध रचनाओं का प्रयोग होता है जिसे 'बोरगीत' कहा जाता है। इसमें ढोल एवं बांसुरी का प्रयोग होता है।

— सन् 2000 संगीत नाटक अकादमी द्वारा इसे शास्त्रीय नृत्य की कोटि में रखा गया।

* लोक नृत्य

लोक नृत्य सामान्यतः स्वतः प्रवर्तित अनगढ़ होती है, तथा उन्हे किसी औपचारिक प्रशिक्षण के बिना ही लोगों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। ये कलाऐं लोगों के एक विशेष वर्ग एवं स्थान तक सीमित रह गई। प्रमुख लोक नृत्य निम्नलिखित है —

बागुरुम्बा :-
असम की बोडो जनजाति से संबंधित है।

कालबेलिया :-
राजस्थान के कालबेलिया (सपेरों का समुदाय) के महिलाओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

तरंग मेल :-
यह गोवा का लोक नृत्य है।

चारबा :-
हिमाचल प्रदेश का लोकनृत्य है।

अलकाप :- झारखण्ड एवं पश्चिम बंगाल में प्रचलित है।

बिहू :-
असम का लोक नृत्य है।

सिंगी छाम :- सिक्किम का मुखौटा नृत्य है।

मईल अट्टम :- केरल तथा तमिलनाडु का लोकनृत्य है जिसे मयूर नृत्य के नाम से जाना जाता है।

* संगीत कला

स्वर – सा रे गा मा पा ध नी

↓

राग

ध्रुपद → अलाप

ख्याल गायिकी का विकास

↓

आरोही या अवरोही प्रवाह

↓

स्वरों का कोई बंधन नहीं

↓

ठुमरी

संगीत कला का जन्म प्राचीन काल में माना जाता है इसका विकास ब्रह्मा, शिव, सरस्वती से होते हुए नारद के माध्यम से पृथ्वी पर पहुँचा। सामवेद को संगीत का प्राचीनतम ग्रंथ माना जाता है।

स्वर :-

संगीत में सात स्वर माने गए हैं।

राग :-

स्वरों को एक साथ मिलाकर उच्चारित करना राग कहलाता है। इस आधार पर राग की तीन श्रेणियां मानी गई।

(i) **औढ़व राग :-**

इसमें पाँच स्वर प्रयुक्त होते हैं

षाड़व राग :- इसमें 6 स्वर प्रयुक्त होते हैं।

सम्पूर्ण राग :- इसमें सभी स्वरों का प्रयोग होता है।

- रागों के गायन में समय का भी महत्व है, जैसे भैरव राग प्रातः काल में, तो मालकोस रात्रि में, श्री राग संध्याकाल में।
- इसीतरह यह रागमनोदशा एवं अनुभूतियों से भी जुड़े होते हैं जैसे हिंडोल राग प्रेम से तथा श्रीराग हर्ष या आनन्द से एवं मालकोष वीरता के मनोभाव से, मेघराग शांति से, तथा कौशिक राग हास्य (प्रमोद) से जोड़ा जाता है।

ध्रुपद गायन :-

यह गायन की प्राचीनतम शैली मानी जाती है। इसका विकास उत्तर भारत में 15वीं-16वीं सताब्दी में मुगल सम्राट अकबर एवं ग्वालियर के राजा मान सिंह के समय माना जाता है। ध्रुपद गायन में भक्ति का तत्व शामिल था। इसमें स्वर एवं ताल का सुन्दर समन्वय मिलता है ध्रुपद में 'अलाप' शुद्ध स्वरों के क्रमशः वदत को दर्शाता है अर्थात् इसमें स्वरों का आरोही क्रम शामिल होता है। ध्रुपद गायन के प्रमुख कलाकार ग्वालियर के राजा मानसिंह, तानसेन, बैजु बावरा हैं।

2. ख्याल गायन :-

- स्वरों की मुक्त उड़ान के नाम पर इसका नाम ख्याल गायन पड़ा। 'अमीर खुसरो' को इसके विकास का श्रेय दिया जाता है साथ ही जौनपुर के शर्की शासकों के समय इसका और विकास हुआ
- इसमें ध्रुपद की कठोरता या जकड़बंदी को कम किया अर्थात् ख्याल गायिकी ने स्वर के बंधु बंधाएं चौखट को तोड़ दिया। इस तरह ध्रुपद की तुलना में ख्याल गायन में अलाप को कम महत्व मिला।
- ख्याल गायन में विभिन्न घरानों की अवधारणा सामने आयी जैसे ग्वालियर घराना - इससे जुड़े प्रमुख व्यक्ति विष्णु पलुस्कर माने जाते हैं। किराना घराना - पंडित भीमसेन जोशी, गंगुबाई हंगल
- ख्याल गायिकी की गंभीरता को कम करने के लिए ठुमरी गायन का विकास हुआ। इस तरह ठुमरी गायन ने संगीत की अनुभूतियों को और भी सरस बनाया तथा इसे रागों के कठोरतम बंधन से मुक्त किया। ठुमरी का विकास लखनऊ से माना जाता है लखनऊ के उस्ताद वाजिद अली शाह इसके जनक कहे जाते हैं इसमें मुख्यतः कृष्ण भक्ति के पाठों का प्रयोग होता है।

अवध के नवाब वाजिद अलिशाह ठुमरी के प्रोत्साहक थे। अवध का कथक नृत्य ठुमरी गायन से विशेषरूप से जुड़ा था ठुमरी के प्रसिद्ध गायक के रूप में बिन्दादीन एवं बेगम अख्तर का नाम उल्लेखनीय है। V.VI

13 July

टप्पा :-

यह ठुमरी गायन का ही दूसरा रूप है इसे पंजाब के शोरी मियां ने विकसित किया। इसका उद्गम उत्तर पश्चिम भारत के ऊँट सवारों के लोक गीतों से हुआ था।

कर्नाटक संगीत शैली

- 14वीं सदी में दक्षिण भारत में संगीत की कर्नाटक शैली का विकास हुआ। 'कर्नाट' का अर्थ प्राचीन, पारम्परिक या शुद्ध होता है। कर्नाटक शैली के त्रिरत्न के रूप में त्यागराज, मुथुस्वामी एवं श्यामशास्त्री को माना जाता है। श्यामशास्त्री ने देवी मिनाक्षी की प्रशंसा में नौरत्न मलिका नामक ग्रंथ की रचना की।
- कर्नाटक संगीत का पितामह पुरन्दर दास को माना जाता है इन्होंने माया महाकौल राग का विकास किया जिसे कर्नाटक संगीत की प्रारंभिक शिक्षा लेने वालों को सिखाया जाता है।

TOPPER says ATUL PHOTOSTAT IS THE MOST TRUSTED SHOP FOR IAS ASPIRANTS....

19 July - कर्नाटक शैली स्वदेशी संगीत शैली है। इसमें 72 रागों का प्रयोग किया जाता है। और गायन के लिए किसी समय का बंधन अनिवार्य नहीं है। यहाँ कुछ स्वरों का उच्चारण उत्तर भारत की हिंदुस्तानी संगीत शैली से अलग होता है जहाँ 'रे' की जगह 'री' तथा ध को जगह द का उच्चारण होता है।

- हिंदुस्तानी संगीत में परम्परागत भारतीय तत्वों के साथ अरबी फारसी प्रभाव भी दिखाई पड़ते हैं और इसमें घरानों की अवधारणा मिलती है तथा 6 प्रमुख रागों का प्रयोग होता है जिसके गायन में समय का पालन आवश्यक है। हिन्दुस्तानी संगीत में जहाँ मुख्यतः तबले एवं सारंगी का प्रयोग होता है वहीं कर्नाटक संगीत में मृदंगम एवं घटम का प्रयोग किया जाता है। मृदंगम के साथ मुक्त लय में गायन का रूप 'थानम' कहलाता है।

संगीत के प्रमुख वाद्य यंत्र

* **वायु से बजने वाले :-**

बांसुरी शंख, तुरही, हारमोनियम, कौलालू

* **तार वाले वाद्य यंत्र :-**

तंबूरा (तानपुरा), वीणा, सरोद, सितार, संतूर, वायलिन

* **ठोस वाद्य यंत्र**

तबला, पखावज (इसका उल्लेख आइने अकबरी में मिलता है)

ATUL PHOTOSTAT

दक्षिण भारत में ढोलक का रूप मृदंगम कहलाता है तो

मणिपुर में पुंगु एवं पश्चिम बंगाल में श्रीखोल कहलाता है।

संगीत नाटक अकादमी (1953):-

- शिक्षा मंत्री मौलाना आजाद के प्रस्ताव से संगीत नाटक अकादमी की स्थापना की गई 1953 में राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद ने इसका उद्घाटन किया। इसका मुख्य उद्देश्य संगीत नाटक एवं नृत्य कला को प्रोत्साहन देना है।
- संगीत नाटक अकादमी के तहत 1959 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की स्थापना हुई। वर्तमान में संगीत नाटक अकादमी पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय के अन्तर्गत कार्य करता है।

TOPPER says ATUL PHOTOSTAT IS THE MOST TRUSTED SHOP FOR IAS ASPIRANTS.....

* नाट्यकला / नाट्य मंच / रंगमंच

भारतीय नाट्य मंच	पश्चिमी रंगमंच/नाट्य
↓	↓
सुखांत नाटक	दुखांत नाटक
↓	↓
मृत्यु, युद्ध के दृश्य वर्जित	भयानक, मृत्यु के दृश्य दिखाए जाते थे।

चरित्र - सरल
- अच्छा → नायक
- बुरा → खलनायक

चरित्र → संश्लिष्ट / जटिलता → एक ही व्यक्ति में अच्छे/बुरे गुण शामिल

लोकनाट्य मंच

- भारतीय समाज में लोकनाट्य मंच का प्रमुख स्थान है नाटक अपने आप में एक सम्पूर्ण कला है जिसमे अभिनय संवाद कविता संगीत आदि एक साथ उपस्थित रहते है। भारतीय समाज में परम्परा का एक विशेष स्थान है फलत! लोक नाट्य मंच में इसी परम्परा का समावेश रहता है लोक जीवन में गेयता एक प्रमुख तत्व है अतः लोक नाट्य शैलीयों में गायन की प्रमुखता है।
- भारत के विभिन्न क्षेत्रों में त्योहार, मेले, अनुष्ठान (पूजापाठ) होते रहते है। इन अवसरों पर लोक नाट्य प्रस्तुत किए जाते है। इस दृष्टि से लोक नाट्य में समाजिकता शामिल होती है।

- लोक नाट्य के अलग अलग रूप हो सकते है जैसे भक्ति से जुड़े - रामलीला, रासलीला, अंकिया नाट तो मनोरंजन से जुड़े - नौटंकी, स्वांग, भांत्रा, तमाशा आदि

* प्रमुख लोक नाट्य / रंगमंच

* **नौटंकी :-**

यह संगीत मय रंगमंच है जो मुख्यतः उत्तरप्रदेश में लोकप्रिय है। इसके संवाद प्रायः पद्य में बोले जाते है। इसमें वीरता तथा प्रेम के नाटक खेले जाते है।

* **भांडपथेर :-**

यह कश्मीर का लोक नाट्य है इसमें नृत्य संगीत शामिल होता है। इसमें व्यंग एवं हास्य शामिल होता है। भांड मूलतः कृषक वर्ग है। इसलिए इस नाट्य कला पर कृषि संवेदना का गहरा प्रभाव है।

* **स्वांग :-**

यह उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश में प्रचलित है। इसमें महिला एवं पुरुष दोनों का अभिनय पुरुष द्वारा ही किया जाता है।

* **माच :-**

यह मध्यप्रदेश की लोक नाट्य कला है जिसका विकास उज्जैन में हुआ। इसमें पारम्परिक कथाओं प्रेम प्रसंगो, हास्य व्यंग को शामिल किया जाता है। यह हास्य व्यंग अश्लील एवं फूहड़पन के स्तर तक पहुँच जाता है अतः इसमें बच्चों एवं महिलाओं का प्रवेश वर्जित रहता है।

ATUL PHOTOSTAT

* जात्रा :-

जात्रा पूर्वी भारत की लोक नाट्य कला है। इसे वैष्णव संत चैतन्य के द्वारा आरंभ किया गया उन्होंने बंगाल में अपनी यात्रा के दौरान कृष्ण की शिक्षाओं का प्रसार करने के लिए जात्रा का माध्यम का प्रयोग किया।

* सांग :-

यह हरियाणा में लोकप्रिय लोक नाट्य है। इसमें खुले स्थानों वादक बीचों बीच बैठते हैं और चारों तरफ श्रोता एवं दर्शक होते हैं,

* करयाला :

यह हिमाचल प्रदेश का लोक नाट्य है। इसमें जीवन एवं मृत्यु के गंभीर प्रश्नों को उठाया जाता है,

* दसकठिया :-

उड़ीसा क्षेत्र में प्रचलित लोक नाट्य है। इसमें कथा के साथ साथ संगीत शामिल होता है, जिसे कठिया नामक लकड़ी से वाद्य यंत्र की सहायता से उत्पन्न किया जाता है।

* भंडजशन :-

यह कश्मीर का प्रहसन (हास्य व्यंग्य) का रंगमंच है और इसमें समाज की बुराइयों पर व्यंग किया जाता है।

* तमाशा :-

यह महाराष्ट्र का लोक नाट्य है नृत्य संगीत के माध्यम से इसे प्रस्तुत किया जाता है। इस लोक नाट्य में नृत्य के लिए मुख्यतः स्त्रीकलाकार को रखा जाता है. और वह मुरकी के नाम से जानी जाती है

राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान स्वदेशी आंदोलन के क्रम में लोगों को एकजुट करने के लिए तिलक ने इस लोक नाट्य का प्रयोग किया था।

भवाई :-

यह गुजरात एवं राजस्थान की नाट्य शैली है। इसमें भक्ति और प्रेम के तत्व शामिल हैं।

दशावतार :-

कोंकण एवं गोवा क्षेत्र का नाट्य रूप है। इसमें विष्णु के दस अवतारों को प्रस्तुत किया जाता है।

पोवाड़ा :-

यह महाराष्ट्र क्षेत्र में लोकप्रिय है। शिवाजी की वीरता की प्रशंसा में एक नाटक की रचना की गई जिसे पोवाड़ा कहा गया।

अंकियानाट :-

यह असम का परम्परागत एकांकी नाटक है। इसका आरंभ शंकर देव द्वारा किया गया। इसमें कृष्ण के जीवन के लीलाओं का चित्रण किया गया है। इसमें रंगे हुए मुखौटों का प्रयोग किया जाता है। यह नाट्य रूप शास्त्रीय नृत्य सत्रिया से संबंधित है।

* दक्षिण भारत के लोक नाट्य :-

1. यक्षगान :-

यह आंध्रप्रदेश एवं कर्नाटक में आज तक प्रचलित प्रचलित प्राचीनतम नाट्य कला है। इसका उद्भव विजय-नगर साम्राज्य में हुआ था। यह नृत्य नाटक के रूप में जाना जाता है।

2. मडियेट्टू :-

यह केरल का पारंपरिक लोक नाट्य है। यह प्रायः देवी के सम्मान में केरल में केवल काली मंदिरों में प्रदर्शित किया जाता है। [2010 में Unesco विश्व धरोहर सूचि में इसे शामिल किया गया]

3. थेय्यम :-

यह केरल में पूर्वजों की पूजा का एक नाट्य मंच है इसमें नर्तक गांव की रक्षा करने वाले देवी देवता के कथानक का मंचन करते हैं। इसमें वेशभूषा अत्यन्त आकर्षक होती है। इसे ओट्टयकोलम के नाम से भी जाना जाता है जिसका उल्लेख तमिल भाषा के संगम साहित्य में मिलता है।

4. कत्तिआट्टम :-

यह कर्नाटक में कृष्ण के जीवन से संबंधित नाट्य परम्परा है।

* कठपुतली कला :-

कठपुतली भारत की प्राचीन परम्परा में लोक नाट्य का एक रूप कठपुतली का प्राचीनतम उल्लेख

तमिल ग्रंथ शीलपादिकारम में मिलता है।

- कठपुतली का महत्व इस रूप में है यह परम्परागत कथाओं को उद्घाटित करती ही है उनमें चित्र कला एवं मूर्तिकला की क्षेत्री शैली भी दिखाई पड़ती है। शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर बच्चों को शारीरिक एवं मानसिक विकास में प्रेरित करने में कठपुतली कला का विशेष महत्व है तो साथ ही अपनी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करने संबंधी कार्यक्रम में भी इसकी उपयोगिता है। इन कठपुतली के माध्यम से विचारों को प्रेषित करने में जो सौंदर्य आनन्द मिलता है वह बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में सहायक होता है। यह कठपुतली लोगों की सृजनात्मक क्षमता को भी दर्शाती है। इस तरह यह किसी स्थान विशेष की चित्रकला, वेशभूषा अलंकारिक कलाओं एवं पारम्परिक कथाओं को उद्घाटित करने वाली लोककला है। इस प्रकार कठपुतली कौशल के आधार पर इसके चार प्रकार माने जाते हैं।

1. सूत्र/धागा कठपुतली :-
   - कठपुतली
   - कुंदेई
   - गोम्बयेट्टा
   - बोम्ब लट्टम

2. छाया कठपुतली :-
   - थोलू बोम्बलट्टम
   - रावण छाया
   - तोगालू गोम्बयेट्टा

ATUL PHOTOSTAT

3. दस्ताना कठपुतली :-

पावकुथू

4. छड़ी कठपुतली :-

यमपुरी

*** कुंदई :-**

उड़ीसा की सूत्र / धागा कठपुतली को कुंदई कहते है। यह हल्की लकड़ी से बने होते है। और इनमे पैर नहीं होते।

*** गोम्बयेट्टा :-**

यह कर्नाटक की धागा कठपुतली है। इसका संबंध कर्नाटक के यक्षगान लोक नृत्य से है।

*** बोम्मलट्टम :-**

तमिलनाडु की यह धागा एवं छड़ी कठपुतली का रूप है। यह भारत में पायी जाने वाली सबसे बड़ी और भारी कठपुतलियाँ होती है। [लगभग 10Kg तक]

*** तोगालु गोम्बयेट्टा :-**

यह कर्नाटक की प्रमुख छाया कठपुतली है इसमें कठपुतलियाँ सफेद स्क्रीन पर रखी जाती है। इसके पीछे से प्रकाश डाला जाता है जिससे स्क्रीन पर छाया बन जाती है। इन्हे प्रायः चमड़े से काट कर बनाया जाता है।

रावण छाया :-

यह उड़ीसा में प्रचलित छाया कठपुतली है।

थोलु बोम्मलट्टम :-

यह आंध्रप्रदेश की छाया कठपुतली मंच है।

पावकुथू :-

यह केरल की दस्ताना कठपुतली है। और कथकली नृत्य शैली से अत्यधिक प्रभावित है।

यमपुरी :-

यह बिहार की छड़ी कठपुतली है जो लकड़ी के एक टुकड़े से ही बनी होती है इसमें कोई जोड़ भी नहीं होता।

पुतुल नाच :-

पश्चिम बंगाल की छड़ी कठपुतली को पुतुलनाच कहते है। इसमें लकड़ियों के विभिन्न जोड़ मौजूद होते है।

* भाषा साहित्य

वैदिक साहित्य / संस्कृत साहित्य

वेद
- अपौरुषेय → देवताओं द्वारा रचना की गई
- श्रुति भी कहा गया
  सुनने / श्रवण परम्परा के द्वारा ज्ञान का प्रसारण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हुआ
- वेद IV हैं
  1. ऋग्वेद
  2. सामवेद
  3. यजुर्वेद
  4. अथर्ववेद

ब्राह्मण ग्रंथ
- वेदों के 'अनुष्ठानिक' व्याख्या करता है
- कर्मकांडीय व्याख्या
- यज्ञ

अरण्यक
- वेदों की रहस्यमयी व्याख्या
- तप पर बल

उपनिषद
- वेदों की दार्शनिक व्याख्या करता है
- ब्रह्म जीव-जगत के संबंधों में
- वेदांत कहा गया
- ज्ञान पर बल
- मुण्डको उपनिषद
  यज्ञ फूटे हुए नाव के समान है
  कर्मकांड की अवहेलना

ऋग्वेद :-

- ऋग्वेद प्राचीनतम वेद है इसमें देवताओं के सम्मान में लिखी गई प्रार्थनाएं हैं। इसके लिए होतृ नामक पुरोहित मौजूद था।
- ऋग्वेद में 10 मंडल शामिल है. तीसरे मंडल का रचनाकार विश्वामित्र को माना जाता है जिन्होंने सूर्य के सम्मान में गायत्री मंत्र की रचना की।
- ऋग्वेद के 7वें मंडल में दशराज युद्ध का वर्णन है जो पुरुषणी नदी के किनारे हुआ जिसमें भरत कबीला की विजय हुई।

ऋग्वेद का नौवां मंडल सोम देवता को समर्पित है

ऋग्वेद की कुछ मंत्रो का उच्चारण महिलाओं ने की जिसमे प्रमुख है अपाला, घोषा, लोपामुद्रा आदि

2. सामवेद :-

इसमें यज्ञ के अवसर पर गाये जाने वाले मंत्रो का संग्रह मिलता है इसका गान करने वाला पुरोहित उदगाता कहलाता है। सामवेद को संगीत की प्राचीनतम पुस्तक माना जाता है।

3. यजुर्वेद :-

- यजु का अर्थ है यज्ञ । इसमें यज्ञ विधियों का वर्णन है अतः यह कर्मकांड प्रधान है। इसका पाठ करने वाला पुरोहित अध्वर्यु कहलाता है यह पाठ करने के साथ साथ यज्ञ में आहुति भी देता है।

- यजुर्वेद वेद अंशतः गद्य (कृष्ण यजुर्वेद) और अंशतः पद्य (शुक्ल यजुर्वेद) में मौजूद है। शतपद ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेद से संबंधित है। यजुर्वेद में लोहे के लिए अयस शब्द का प्रयोग हुआ है। [वाजसनेयी संहिता में]

4. अथर्ववेद :-

इसकी रचना अथर्वा ऋषि ने की थी। इनके साथ आंगिरस भी जुड़े हुए थे। इसलिए अथर्ववेद को अथर्वांगिरस भी कहते है। अथर्ववेद में तंत्र मंत्र जादू टोना का समावेश है इस

कारण इसे समाज की निचली संस्कृति से जोड़ा जाता है। अथर्ववेद को ब्रह्म वेद भी कहते हैं। इसमें काशी राज का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है

- अथर्ववेद से जुड़े मुण्डकोपनिषद में 'सत्यमेव जयते' का उल्लेख है। इसी उपनिषद में कहा गया कि यज्ञ टूटे हुए नाव के समान है अतः इससे भवसागर पार नहीं किया जा सकता। इसतरह ब्राह्मण वादी कर्मकाण्ड की पहली आलोचना उपनिषदों में दिखाई देती है।

20 July

शास्त्रीय भाषा

भारत सरकार ने सन् 2000 से भारतीय भाषाओं में कुछ मानदण्डों के आधार पर उन्हें शास्त्रीय भाषा का दर्जा देना शुरू किया। ये मानदण्ड हैं:

1. भाषा और उसके साहित्य का कम से कम 1500 से 2000 वर्ष पुराना इतिहास हो और साहित्यक ग्रंथ एवं वक्तव्यों की प्राचीन परम्परा हो।
2. भाषा एवं साहित्य की मौलिक परम्परा हो। किसी अन्य भाषायी परम्परा से उधार ली हुई न हो
3. शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिलने के बाद केन्द्र सरकार उस भाषा पर शोध एवं विकास के लिए अनुदान देती है तो साथ ही शास्त्रीय भाषाओं के प्रतिष्ठित विद्वानों को पुरस्कार दिया जाता है तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) से निवेदन किया जायेगा कि

कम से कम केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में शास्त्रीय भाषाओं के अध्ययन कराने के लिए उस भाषा के प्रतिष्ठित विद्वानों के लिए पदों का सृजन किया जाए।

ए, शास्त्रीय भाषा के रूप में अभी तक 6 भाषाओं को मान्यता मिली है -- तमिल
- संस्कृत
- तेलगु
- कन्नड़
- मलयालम
- ओड़िया। (2014 वर्ष)

* तमिल भाषा एवं साहित्य

↓

'संगम साहित्य'

↓

वर्गीकरण

- प्रवृत्तियों के आधार पर
  - अगम → प्रेम संबंधी रचनाएँ → अन्तरंग विषयों से संबंधित
  - पुरम → बाह्य विषय से संबंधित → राजा की प्रशंसा से संबंधित कविता
- भौगोलिक संरचना के आधार पर
  1. कुरंजी → पहाड़ी क्षेत्र
     विवाह पूर्व प्रेम संबंधी रचनाएँ
  2. पाल्लै → मरुस्थल
     प्रेमियों के दीर्घकालीन विरह से संबंधित
  3. मुल्लै → वन/जंगल
     प्रेमियों के अल्पकालीन विरह से
  4. मरुदम → कृषि क्षेत्र संबंधित
     विवाह पश्चात प्रेम संबंधी
  5. नेयतल → समुद्रतटीय क्षेत्र (गृहस्थ प्रेम)

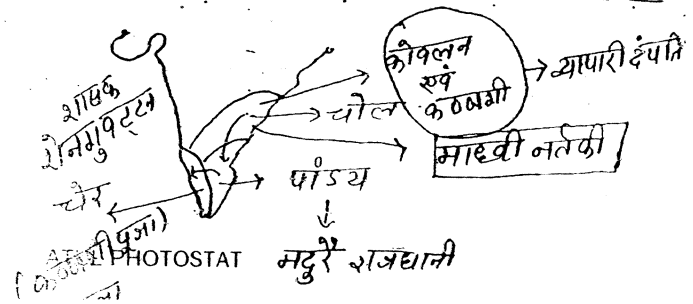

शील पादिकारम → नूपुर की कहानी
(पायल)

* संगम साहित्य

संगम का तात्पर्य तमिल कवियों की बैठक है। और इसमें संकलित किए गए साहित्य को संगम साहित्य के नाम से जाना जाता है। यह 300 ई०पू० से 300 ई० के बीच की अवधि में संकलित किया गया। अत: इस काल को संगम काल के रूप में जाना गया। संगम साहित्य से हमें दक्षिण भारत के चोल चेर पांड्य राज्य के सामाजिक आर्थिक राजनीतिक एवं धार्मिक विश्वासों की जानकारी मिलती है।

– पांड्य राज्य में तीन संगम आयोजित हुए।

	स्थान	अध्यक्ष	कार्य
प्रथम संगम	तेन मदुरा	अगस्त्य	सभी रचनाएं नष्ट हो गई।
द्वितीय संगम	अलवै/कपाटपुरम	अगस्त्य + तोलकाप्पियार	'तोलकाप्पियम' नामक तमिल व्याकरण ग्रंथ का संकलन
तृतीय संगम	मदुरै	नक्कीरर	8 ग्रंथों का संकलन ↓ एट्टुतोगई कहलाता है

* तीन महाकाव्य

① शील पादिकारम :–

लेखक – इलांगो आदिकल

शील पादिकारम को तमिल जनता का राष्ट्रीय काव्य कहा जाता है 92

इसमें मदुरै नगर का सुन्दर वर्णन मिलता है। इस महाकाव्य के नायक नायिका कोवलन एवं कण्णगी थे जो चोल राज्य के व्यापारी दम्पति हैं। इस ग्रंथ में माधवी नर्तकी का उल्लेख मिलता है जिसके सम्पर्क में कोवलन आया। माधवी अंत में बौद्ध धर्म ग्रहण कर लेती है।

- पांड्य राज्य में कोवलन को पायल चोरी के आरोप में मृत्युदण्ड की सजा मिलती है किन्तु वह निर्दोष था। अतः कण्णगी ने अपनी क्रोधाग्नि से मदुरै नगर को जला डाला और फिर वह चेर राज्य में आकर सती हो गई। अतः चेर शासक शेनगुट्टुवन ने कण्णगी पूजा (पत्नी पूजा) का प्रचलन कराया। इस तरह शीलप्पादिकारम में कण्णगी पूजा का प्रचलन मिलता है। कण्णगी पूजा का प्रचलन संगमकालीन मातृसत्तात्मक समाज के पितृसत्तात्मक समाज में रूपांतरण को संकेतित करता है।

2. मणिमेखलई :- लेखक - सीतलैसत्तनार

मणिमेखलई में कोवलन और माधवी से उत्पन्न मणिमेखलई एवं राजकुमार उदयन (चोल) के प्रेम संबंध की चर्चा है। मणिमेखलई भी अंत में अपनी माता की तरह बौद्ध धर्म ग्रहण कर लेती है।

जीवक चिंतामणि :-

लेखक - तिरुत्तक देवर

- जीवक एक योद्धा था और युद्ध विजय के उपरांत एक विवाह करता था अत: इसे विवाह ग्रंथ भी कहते हैं जीवक जैन मतअनुयायी था।

तमिल साहित्य का विकास

- तमिल संत तिरुवल्लुवर ने तिरुकुरल की रचना की जिसे तमिल वेद भी कहा जाता है। संगम साहित्य में योगदान देने वाली प्रसिद्ध महिला कवि अव्वइयर है।
- सातवीं-आठवीं सदी में नयनार संतों (शैव) एवं अलवार संतों (वैष्णव) ने तमिल भाषा में भक्ति गीत लिखे जिन्हें 'तेवारम' कहा जाता है। प्रमुख नयनार संत सम्बंदर एवं तिरुनाम थे। तो अलवार संतों में एक मात्र महिला 'अण्डाल' थी।
- 11वीं सदी में तमिल भाषा में चोल दरबार के लेखक कंबन ने तमिल रामायण की रचना की
- 20वीं सदी में राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान सुब्रमण्यम भारती ने तमिल भाषा में कविताएँ लिखकर राष्ट्रवादी भावनाओं को जागृत किया।

स्वतंत्रता के पश्चात अखिलन्दम को तमिल भाषा का ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।

* तेलगू साहित्य

- तेलगू साहित्य का विकास 7 वीं सदी से मिलना प्रारंभ होता है। 11वीं सदी में नन्नाया ने तेलगू महाभारत की रचना की। किन्तु 16वीं सदी में विजयनगर सम्राज्य में कृष्णा देव राय का शासन तेलगू साहित्य का स्वर्ण काल कहलाता है। कृष्णा देवराय ने स्वयं तेलगू भाषा में अमुक्तमाल्यद। नामक ग्रंथ लिखा जो राजनीतिक प्रशासनिक विषय से संबंधित है।
- कृष्णा देव राय के दरबार में तेलगू भाषा के आठ महाकवि रहते थे जिन्हें अष्टदिग्गज कहा गया। इनमें सर्व प्रमुख अलसानी पेद्दन थे। इन्हे कविता का पितामह माना जाता है। इन्होंने मनुचरित नामक ग्रंथ लिखा। इसी तरह नंदीतिम्मन ने परिजात अपहरणम् नामक ग्रंथ लिखा। इन अष्टदिग्गजों में तेनालीरामकृष्णा मौजूद थे जिन्होंने पांडुरंग महात्म्य नामक ग्रंथ की रचना की।

* असमी साहित्य :-

- 13वी सदी से असमी भाषा एवं साहित्य का विकास हुआ। इस काल में रुद्र कुंडली ने महाभारत का असमी भाषा में अनुवाद किया तो माधव

कुंडली ने रामायण का अनुवाद किया। महान संत कवि शंकर देव ने असमी भाषा में गीत लिखे। इन गीतों वाले नाटकों को अंकियानार कहा जाता है जिसे शास्त्रीय नृत्य सत्रिया में प्रयोग किया गया।

- आधुनिक असमी साहित्य को बुरंजी के नाम से जाना जाता है। 19वीं सदी में लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ ने असमी साहित्य को अत्यधिक प्रसिद्ध दिलाई।

* उड़िया साहित्य

- उड़िया भाषा का विकास 7वी-8वीं सदी से माना जाता है। 14वीं सदी में सरलादास द्वारा लिखा गया उड़िया महाभारत उल्लेखनीय है।
- 15वीं सदी में पंचसखा
  - बलराम
  - जगन्नाथ
  - अनन्त
  - यशवंत एवं
  - अच्युतानंद ने संस्कृत ग्रंथों को उड़िया में रूपांतरित किया ताकि आम जनता भी इसे पढ़ सके।

* कन्नड़ साहित्य

- 450 ई० से कन्नड़ भाषा के अभिलेख प्राप्त होते हैं।
- कन्नड़ की प्राचीनतम प्रसिद्ध रचना कविराजमार्ग है। इसे राष्ट्रकुट शासक 'अमोघवर्ष' ने लिखा।
- कन्नड़ महाकाव्य के परम्परा में पम्पा का नाम उल्लेखनीय है। इसे कन्नड़ के आदिकवि के रूप में

जाना जाता है। इसने आदि पुराण की रचना की।

— कन्नड़ महाकाव्य के परम्परा में पम्पा, पोन्ना, रन्ना को त्रिरत्न कहा जाता है। पोन्ना ने शांति पुराण की रचना की। मस्ती वेंकटेश को कन्नड़ लघुकथा का जनक कहा जाता है।

* उर्दू साहित्य

उर्दू का शाब्दिक अर्थ है शिविर। उर्दू भाषा का विकास सैन्य छावनी या शिविरों में हुआ। इसके विकास में तुर्की, हिंदवी, फारसी भाषा की भूमिका रही। इस तरह उर्दू भाषा इंडो इस्लामी संस्कृति के समासिक रूप को व्यक्त करती है। दक्षिण के बहमनी बीजापुर, गोलकुण्डा राज्यों में इसे साहित्यिक दर्जा प्राप्त था। वस्तुतः गज़ल गायिकी में इसका रूप दिखाई पड़ता है।

ग़ज़ल :-

ग़ज़ल अरबी साहित्य की काव्य विधि है जो आगे चलकर फारसी, उर्दू एवं हिन्दी साहित्य में लोकप्रिय हुई अरबी में ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ महिला से जोड़ा जाता है।

— ग़ज़ल शेरों का समूह है। पहले शेर को मतला कहते हैं जबकि अंतिम शेर को मकता कहते हैं मकते में सामान्यतः शायर अपना नाम रखता है जिसे तखल्लुस कहते हैं शेर में तुकांत शब्दों को काफिया कहा जाता है तो पुनरावृत्ति शब्दों को

रदीफ कहते हैं। गजलों के संग्रह को दीवान कहते हैं। उर्दू का पहला दीवान शायर कुली कुतुब शाह का है।

- फारसी में आकर गजल गायिकी का स्वरूप अध्यात्मिक हो गया। यह अरबी की इश्क मजाजी से इश्क हकीकी में बदल गया। अर्थात् लौकिक प्रेम से अलौकिक प्रेम में बदल गया।

मिर्जा गालिब :- (1796-1869):-

इनका मूल नाम मिर्जा असद अल्लाह बेग था इनका जन्म आगरा में हुआ। ये उर्दू एवं फारसी भाषा के प्रमुख शायर थे।

फिराक गोरखपुरी (1896-1982):-

इनका मूल नाम रघुपति सहाय था यह भारतीय सिविल सेवा परीक्षा में उत्तीर्ण हुए थे किन्तु नौकरी से त्यागपत्र देकर राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल होकर जेल भी गए। कुछ समय तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के अध्यापक रहे। 1968 में पद्म भूषण पुरस्कार मिला। 1970 में इनकी रचना गुल-ए-नगमा को उर्दू भाषा के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।

बेगम अख्तर :-

इनका जन्म 1914 में हुआ और शास्त्रीय संगीत और गजल गायक के रूप में इनका नाम उल्लेखनीय है। 2014-15 में इनका जन्म शताब्दी वर्ष मनाया गया।

* बहादुर शाह जफर :-

यह अंतिम मुगल सम्राट था और उर्दू शायरी के लिए जाना जाता है।

* अमीर खुसरो :-

दिल्ली सल्तनत काल में भाषा साहित्य संगीत एवं इतिहास लेखन के क्षेत्र में इनका कार्य उल्लेखनीय है। इनके गजल में फारसी भाषा का भारतीय करण दिखाई देता है। इनके शेर में एक पंक्ति फारसी की तो दुसरी पंक्ति ब्रज भाषा की है।

* साहित्य अकादमी.

भारत सरकार ने 1954 में साहित्य अकादमी की स्थापना की। इसका प्राथमिक कार्य भारत में साहित्यिक संस्कृति को प्रोत्साहित करने सभी भारतीय भाषाओं में साहित्य का संरक्षण करने एवं और कुल मिलाकर देश की राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करने के लिए एक राष्ट्रीय संगठन के रूप में कार्य करना था।

— यह 24 भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों में पुरस्कार आदि देता है। भारतीय संविधान के 8वी अनुसूचि में 22 भाषाओं का उल्लेख

मिलता है। साहित्य एकादमी दो और भाषाओं अंग्रेजी एवं राजधानी को मान्यता देता है। इसतरह यह भारत में विभिन्न प्रचलित भाषाओं के विकास को प्रेरित करता है।

अन्य :-

- भारत की कोई राष्ट्रीय भाषा नहीं है वस्तुतः संविधान में कहीं राष्ट्रीय भाषा शब्द का उपयोग नहीं है। संविधान राज्यों के लिए राज्य भाषा की बात करता है किन्तु इसे निर्धारित करने के लिए राज्य स्वतंत्र हैं। यह अनिवार्य नहीं है कि वह भाषा 8वीं अनुसूचि में उल्लेखित हो। अनेक राज्यों ने ऐसी भाषा को राजभाषा के रूप में अपनाया है जो वहां उल्लेखित नहीं है। जैसे त्रिपुरा में 'कोकबेरोक' मिजोरम में 'मिजो' तथा पांडिचेरी में फ्रांसीसी भाषा प्रचलित है। तो नागालैण्ड एवं मेघालय की राजभाषा अंग्रेजी है।

लोकनृत्य :-

* रउफ :-

यह काश्मीर घाटी की लोकप्रिय लोकनृत्य है जिसे केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है। यह नृत्य फसल के कटाई के मौके पर किया जाता है। इसे पवित्र रमजान के महीने में भी किया जाता है। इसी तरह यहाँ के छमाली नृत्य को पुरुष करते हैं और इसे ईश्वर की कृपा पाने के लिए किया जाता है। यह यहाँ का परम्परागत नृत्य है और दरगाहों में यह बेहद लोकप्रिय है। इसमें एक शख्स झण्डा लेकर नृत्य दल का नेतृत्व करता है और यह आलमी झंडा जमीन में गाड़ कर उसके चारों तरफ एक वृत बना कर नृत्य किया जाता है।

* हिकात

इसे कश्मीर में युवा लड़के-लड़कियाँ आपस में जोड़ा बनाकर करते हैं। इसमें नर्तक जोड़ा एक-दूसरे के हाथों को पकड़ते हुए एक पैर आपस में जोड़ता है और शरीर को थोड़ा पीछे झुकाकर नृत्य करता है। नर्तक एक-दूसरे का चेहरा देखते हुए घुमते हैं। इसमें किसी प्रकार के वाद्य का प्रयोग नहीं होता है नर्तक केवल गीतों के बोलों पर नृत्य करते हैं।

* जाब्रो (Jabro) :-

यह लद्दाख क्षेत्र का नृत्य है और यह वहाँ के चांग-थांग क्षेत्र में ज्यादा लोकप्रिय है। इसमें

महिलाएँ एवं पुरुष दोनों भाग लेते हैं। यह नृत्य थोड़ा धीमा शुरू होता है अंत तक आते-आते यह तेज हो जाता है। इसे प्रायः चाँदनी रात में देर तक किया जाता है। इसमें रबाब जैसा वाद्ययंत्र दमनयान बजाया जाता है।

गिद्दा :-

यह नृत्य केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है। इसमें एक गोले में बोलियां गायी जाती है तथा तालियां बजायीं जाती है। दो प्रतिभागी घेरसे निकलकर बीच में आती हैऔर अभिनय करती है। जबकि शेष समूह में गाती है। यह पुनरावृत्ति 3-4 बार होती है। प्रत्येक बार दूसरी टोली होती हैजो एक नई बोली से शुरुवात करती है। इसमें ढोलक वाद्य का प्रयोग किया जाता है। यहां यह ध्यान देना होगा कि मालवी गिद्दा पुरुषों द्वारा किया जाता है। इसमें व्यंग भरे गीतों का प्रयोग किया जाता है। इसका उदगम पंजाब के मालवा क्षेत्र के संगरुर जिले के गांव छत्ता से माना जाता है। इसमें तुंबी चिमटा सप्पो आदि वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

इसी तरह किकली एवं सम्मी दो लोक नृत्य है जो महिलाओं द्वारा ही किया है। किकली लड़कियों द्वारा और सम्मी औरतों द्वारा। सम्मी में नर्तक लहंगा और कुर्ती पहनती है और बालों में रजत आभूषण लगाती है।

ATUL PHOTOSTAT

*गतका :-

यह वास्तव में सिख शस्त्र कला कौशल का प्रदर्शन है। इसमें सिक्ख पुरुष तलवार और ढाल लेकर अपने युद्ध कौशल को नचते हुए प्रदर्शित करते हैं।

*कोथू

इस शास्त्रीय नृत्य का मंचन केरल के चकयार कलाकारों द्वारा कोथामबम् मंदिर में किया जाता है। यह केरल की सबसे प्राचीन एवं नाटकीय कला में शामिल है। इसमें नर्तक के शरीर एवं चेहरे का हाव भाव तथा चिन्ह एवं नियोजित इशारे सांस्कृतिक ग्रंथों में वर्णित सिद्धांतों पर आधारित है। कोथू में हास्य तत्व भी है। इसके वाद्य यंत्रों में झांझ और मंजीरे की जोड़ी और एक ढोल होता है। झांझ को हमेशा महिलाओं के द्वारा ही बजाया जाता है। जिन्हे नंगियार कहते हैं। कोथू को एकल तौर पर प्रस्तुत किया जाता है जिसे प्रबंधा कोथू के नाम से जाना जाता है।

कुडियाट्टम्

यह केरल का शास्त्रीय नृत्य है। यह देश की पुरानी नृत्य नाटिकाओं में शामिल है जिनका निरंतर प्रदर्शन हो रहा है। राजा कुल शेखर वर्मन ने 10वीं सदी में इसमें सुधार किये थे। इसमें मास हर्ष और

महेंद्र विक्रम पल्लव द्वारा लिखे गए नाटक शामिल हैं। पारम्परिक रूप से चकयार जाति के सदस्य इसमें अभिनय करते हैं। इसका प्रदर्शन आम तौर पर कई दिनों तक चलता है। इसमें कुछ चरित्रों के परिचय और उनके जीवन की घटनाओं को समर्पित किया जाता है। इसमें जटिल हाव-भाव मन्त्रोच्चार, चेहरे और आँखों की अतिशयत अभिव्यक्ति विस्तृत मुकुट और चेहरे की सज्जा के साथ मिलकर कुडियाट्टम का अभिनय करते हैं। इसमें मिझावु, छोटी घंटियाँ, एडक्का, कुझाल और शंख से संगीत दिया जाता है।

* कृष्णाअट्टम

केरल के इस नृत्य नाटिका में भगवान कृष्ण की पूरी कहानी एक नाटक चक्र में दिखाई जाती है। इसका प्रदर्शन आठ रातों तक चलता है। इसका प्रदर्शन गुरुवायुर मंदिर में भी किया जाता है। प्राचीन धार्मिक लोक नृत्यों जैसे थियाट्टन, मुडियाट्टू एवं थियाम की कई विशेषताओं को कृष्णा अट्टम में देखा जा सकता है। जिनमें चेहरे का रंगना, रंगीन मुखौटे का उपयोग, सुंदर वस्त्र एवं कपड़ों का उपयोग आदि महत्वपूर्ण है। इसमें मलादम इलाथम और चेंगला नामक संगीत यंत्रों का प्रयोग होता है।

* चाक्यार कूतु नृत्य :-

यह केरल के शास्त्रीय नृत्यशैलियों में से एक है। पहले इसका आयोजन केवल मंदिर में किया जाता था। इसके नृत्यकार को कूतम्बलम् कहते हैं। इस शैली में स्वर के साथ कथापाठ किया जाता है, जिसके अनुसार चेहरे और हाथों से भावों की अभिव्यक्ति की जाती है। इसके साथ सिर्फ झाँझ और ताँबे का बना व चमड़े मढ़ा ढोल जैसा एक वाद्य यंत्र बजाया जाता है।

* लोसर शोना चुकसम :-

यह कृषि उत्सव के अवसर पर किया जाने वाला नृत्य है। लोसार का आशय है तिब्बती लोगों का नया साल। इस नृत्य को किन्नौरी लोगों द्वारा अनूठी शैली में पेश किया जाता है। इसमें नृत्य के दौरान बुआई से लेकर कटाई तक खेती की प्रक्रिया से संबंधित सभी गतिविधियों का प्रदर्शन किया जाता है। इस नृत्य में मूकाभिनय या माइम के रूप में नये-नये प्रदर्शनों को शामिल किया जाता है। इसमें नर्तक गाना गाने के साथ वाद्य यंत्र भी बजाता है।

* गिद्दा नृत्य (पड़ुआ) :-

यह नृत्य हिमाचल प्रदेश सोलन, बिलासपुर तथा मंडी के कई स्थानों पर प्रचलित है। पंजाब में भी गिद्दा होता है परन्तु यहां का गिद्दा पंजाब से बहुत भिन्न है। यह नृत्य अर्द्ध-चंद्राकार स्थिति में

किया जाता है। यह नृत्य विवाह परम्परा से जुड़ा है। जब बारात वधू के घर जाती है तो उसके बाद घर की स्त्रियाँ घर पर यह मंगल नृत्य करती है। यह नृत्य वधू के संदर्भ में उसके सम्मान की प्रशंसा, भैजाजी तथा सास के किस्सों से व सौत की डाह में गाए जाने वाले गीतों से जुड़ा है। ऊना जिले में भी गिद्धा नृत्य की परम्परा है औ पंजाब के गिद्धा से बहुत मिलता है।

सिंघी छम्म और राक्षस छम्म

बौद्ध संस्कृति से प्रभावित लाहौल-स्पीति जनपद में होने वाले इस सिंह नृत्य में लामा और बौद्ध धर्म से जुड़े लोग सिंह का वेश धारण कर पारंपरिक लोक वाद्यों की ताल पर नृत्य करते हैं। इसमें यह अवधारणा है कि विकट रूप धारण करने से दुष्ट आत्माएँ तंग नहीं करती हैं। इसी तरह राक्षस छम्म में मुखौटा पहन कर नृत्य किया जाता है।

* पण्डवानी :-

पण्डवानी छत्तीसगढ़ राज्य की प्रसिद्ध लोकनृत्य है। इस लोकनृत्य का मूल आधार पांडवों की कथाएँ हैं। इसी कारण इसे पण्डवानी नृत्य कहा जाता है। इसमें नृत्य एवं अभिनय द्वारा पाण्डवों की कथाएँ, एकतारे के साथ प्रदर्शित की जाती हैं।

इस नृत्य से संबंधित कलाकार है - तीजन बाई ऋतु वर्मा आदि।

***चारकुला :-**

यह उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र का लोकप्रिय नृत्य है,जो मुख्य रूप से होली के अवसर पर किया जाता है। इस नृत्य में महिलाएँ दीपक रखे हुए किसी पहिए को सिर पर रखकर नृत्य करती है।

*** यक्षगान :-**

यह कर्नाटक का पारम्परिक नृत्य नाट्य है। इसका मुख्य विषय पौराणिक धर्म कथाएँ होती है। इन पौराणिक कथाओं के भावों को व्यक्त करने के लिए कथावस्तु में गीत और संगीत से जोड़ा जाता है। इसकी प्रस्तुति में चैंड और मेडल, घंटियों जैसे वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। कलाकारों का भव्य और भड़कीला श्रृंगार किया जाता है। उनके आभूषण लकड़ी के होते है। और उन्हें शीशे व सुनहरे कागजों से सजाते है। कलाकार विशाल मुकुट भी पहनते है। यक्षगान में युद्ध का मंचन होता है।

* भारत के विभिन्न राज्यों प्रचलित लोकनृत्य :-

राज्य	प्रचलित लोकनृत्य
सिक्किम	सिंघी छाम, याक नृत्य
कर्नाटक	यक्षगान
मिजोरम	चैलम
नागालैंड	भेईलांग
मेघालय	नोंगक्रेम, वेहदीखलम
त्रिपुरा	लेबांग
पुडुचेरी	गराडी
जम्मू कश्मीर	रौफ या रऊफ

किससे संबंधित कौन ?

1. अलीअकबर खाँ – सरोद
2. अल्लाउद्दीन खाँ – सरोद
3. बैजु - बावरा – गायन
4. उमराव खाँ – वीणा
5. सादत खाँ – सरोद
6. गौरव प्रसाद – तबला
7. शम्भू महाराज – कथक
8. किसन महाराज – तबला
9. सामता प्रसाद मिश्र – तबला
10. कुदव सिंह परवावजी – परवावज
11. तरुण भट्टाचार्य – संतूर
12. केशव तेलेगांवकर – गिटार
13. एम. एस सुब्बलक्ष्मी – कर्नाटक गायन
14. राजन साजन मिश्र – गायन
15. बिरजू महाराज – कथक
16. पंडित रविशंकर – सितार
17. पन्नालाल घोष – बांसुरी
18. बिस्मिल्ला खां – शहनाई
20. विलायत अली खां – सितार
21. अमजद अली खां – सरोद
22. शिव कुमार शर्मा – संतूर
23. विश्व मोहन भट्ट – गिटार, रुद्रवीणा
24. हरिप्रसाद चौरसिया – बांसुरी
25. अल्लारखाँ खां – तबला
26. गिरिजा देवी – गायन (ठुमरी)
27. सितारा देवी – कथक
28. गंगूबाई हंगल – गायिका

शशि मोहन भट्ट - सितार
पण्डित जसराज - गायन
पण्डित भीमसेन जोशी - गायन
हीराबाई बडोदकर - गायन
रसूलनबाई - ठुमरी गायन
मैयालिंकर सुब्बेन - कर्नाटक गायन
विष्णु दिगम्बर पलुस्कर - गायन, शास्त्री

* लेखक और उनकी रचना

रचना		रचयिता
नाट्यशास्त्र	–	भरत मुनि
संगीत रत्नाकर	–	शारंगदेव
स्वरमेल कलानिधि	–	रामामात्य
मानसोल्लास	–	सोमेश्वर
राग दर्पण	–	फकीर उल्ला
संगीत राज	–	महाराणा कुम्भा
गीत गोविन्द	–	जयदेव
संगीत मीमांसा	–	महाराणा कुम्भा
हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति	–	विष्णु नारायण भातखण्डे।
संगीत शास्त्र	–	विष्णु नारायण भातखण्डे

* संगीत के प्रमुख वाद्य यंत्र एवं उनके विख्यात वादक:-

* सितार :- पंडित रविशंकर
* वायलिन : - एल. सुब्रह्मण्यम
* सरोद : - उस्ताद अलाउद्दीन खाँ, उस्ताद अली अकबर खाँ, उस्ताद अमजद अली खाँ
* शहनाई : - भारत रत्न बिस्मिल्ला खाँ
* वीणा : - एस बालचन्द्रन
* संतूर : - पं. शिव कुमार शर्मा तरुण भट्टाचार्य।
* बांसुरी :- पन्नालाल घोष, हरिप्रसाद चौरसिया
* गिटार :- विश्व मोहन भट्ट
* तबला :- उस्ताद अल्ला रखा, पंडित सामता प्रसाद 'गुदई महाराज'। उस्ताद जाकिर हुसैन

* प्रमुख संगीत संस्थाएं एवं संस्थान :-

- भातखण्डे हिन्दुस्तानी संगीत महाविद्यालय (लखनऊ)
- रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय (कोलकाता)

* युद्ध कला एवं परम्परागत खेल

युद्धकला :-

कलारिपयट्टू :-

केरल के मार्शल आर्ट कलारिपयट्टू को विश्व में मार्शल आर्ट का प्राचीन और सबसे वैज्ञानिक रूप माना जाता है। लड़ाई का प्रशिक्षण कलारि थाति नामक एक प्रशिक्षण स्कूल में दिया जाता है। कलारि के नियमों के तहत मार्शलआर्ट का प्रशिक्षण की शुरुवात शरीर की तेल मालिश से की जाती है जो देह को फूर्तिला और लचीला बनाती है। इसके बाद चाट्टोम (कूद) ओट्टम (दौड़), मरिचिल (कला बाजी) आदि जैसे करतब सिखाए जाते हैं। जिसके बाद कटार, तलवार भाला, गदा, धनुषबाण जैसे हथियार चलाने की विद्या सिखाई जाती है।

कलारिपयट्टू के प्रशिक्षण का उद्देश्य व्यक्ति के मन और शरीर के बीच बेहतरीन तालमेल स्थापित करना होता है। कलारि के पारम्परिक प्रशिक्षण में देशी चिकित्सा विधियों को भी शामिल किया जाता है। कलारि धार्मिक पूजन के भी केन्द्र होते है। कलारिपयट्टू के सामान्य नियमों के तहत व्यक्ति से अपेक्षा

की जाती है कि वह प्रशिक्षण पूरा होने के बाद भी तेल मालिश और बाकी का व्यायाम जारी रखेगा।

* सिलाम्बम्

यह तमिलनाडु में प्रचलित युद्ध कला है। यह माना जाता है कि पांड्य शासकों ने इस कला को प्रश्रय दिया। तमिल ग्रंथ शिल्पादिकारम में इसका उल्लेख मिलता है। इसमें मुख्यतः लाठियों का प्रयोग होता है और कभी कभी दूसरे प्रकार के अस्त्रों जैसे हिरण के सींगों का भी इस्तेमाल किया जाता है। इसे मिट्टी के मैदान में खेला जाता है। जब इसमें दो खिलाड़ी होते हैं तो इसकी अवधि हः सेंदस मिनट तक होती है। जब इसे बिना शस्त्रों से खेलते हैं तो इसे कुट्टु वरिसई कहा जाता है। तमिलनाडु की एक और युद्ध कला का नाम वरमा कलाई है और इसे कुट्टु वरिसई का आवश्यक अंग भी माना जाता है।

* ठोडा :-

यह हिमाचल प्रदेश की युद्ध कला है। इसमें धनुष-बाण का प्रयोग होता है। इसका संबंध कौरव-पांडव के बीच हुए युद्ध से जोड़ा जाता है। वैसाखी और अन्य शुभ अवसरों पर होने

वाले इस कौशल प्रदर्शन में दो दल होते हैं जिसमें एक को पार्टी और दूसरे को साथी कहा जाता है। ~~इसमें~~ इसमें भाग लेने वाले प्रतिभागी एक विशेष प्रकार के सफेद वस्त्र धारण करते हैं।

* गतका :-

इस युद्ध कला का प्रचलन सिख समुदाय और पंजाब में है। इसका अभ्यास करतब, खेल और अनुष्ठान तीनों के आधार पर होता है। इसमें खिलाड़ी के हाथों में लकड़ी के तलवारें या भाले होते हैं और उनके दूसरे हाथ में ढाल होते हैं। इसके अलावा गतका में व्यक्तिगत और समूह के बहादुरी पूर्वक कार्यों का प्रदर्शन किया जाता है।

भारतीय परम्परागत खेलों के मुख्य उदाहरण :-

* असोल आप और असोल ताले आप :-

यह अंडमान और निकोबार में रहने वाली छः जनजातियों में केवल निकोबारी ही ऐसे हैं जिनके पास रीति-रिवाज और विकसित परम्पराएँ हैं। इन लोगों को दो मुख्य खेल असोल आप और असोल ताले आप हैं। इसमें असोल-आप नौका दौड़ है। यह नौका करीब 100 फीट लंबी होती है और उसमें खिलाड़ी चप्पू लेकर बैठते हैं। और अपनी ताकत से नौका खिंचते हैं। एकसमय में केवल दो टीमें ही भाग लेती हैं। "आसोन ताले आप" दौड़ पानी की बजाय रेत पर होने वाली नौका दौड़ है। इसमें जो खिलाड़ी भाग लेते है वे अपनी अपनी नौका को रेत पर दौड़ाते हैं।

* कीनागा हूआन नामक खेल में खिलाड़ी सुअर के साथ कुश्ती लड़ता है।

* निकोबार में होने वाले परम्परागत कुश्ती को किरिप कहा जाता है। इसी तरह सालंदू भी यहाँ एक प्रकार की कुश्ती का नाम है जिसमें दो टीमें भाग लेती है और दूसरी टीम के खिलाड़ी को एक छोर से बाहर निकालने का प्रयास करती है।

* धोपखेल :-

यह असम का लोकप्रिय खेल है। यह वसंत ऋतु में रंगोली बिहू के अवसर पर खेला जाता है। धोप दो प्रकार का होता है। एक को पुरुष खेलते हैं और दूसरे को महिलाएं। इसमें एक रबड़ की गेंद का प्रयोग होता है। इसमें 11-11 खिलाड़ियों की एक-एक टीम खुले मैदान में आसमान में उछाली गई गेंद या धोप को पकड़ने का प्रयास करती है।

* गेला-दूट :-

यह त्रिपुरा का प्रसिद्ध स्थानीय खेल है। इसमें खिलाड़ियों के दो समूह भाग लेते हैं। जिसमें करीब सात से दस खिलाड़ी तक होते हैं।

* हियांग तन्नाबा

यह मणिपुर की नौका-दौड़ संबंधी खेल है जो कि लाई हरओबा उत्सव में खेला जाता है। इसमें दो नौकाओं के बीच दौड़ होता है।

* इन्सुकनावर :-

यह डंडा से विपक्षी खिलाड़ी को धकेलने वाला मिज़ोरम का लोकप्रिय खेल है। इसमे केवल पुरुष ही भाग लेते हैं। इस खेल को मिज़ो राष्ट्रीय खेल घोषित किया गया है। इसमें खिलाड़ी आठ फीट लम्बे एक डंडे के सिरे को पकड़ते हैं और खिलाड़ी करीब 18 फीट व्यास वाले घेरे से दूसरे खिलाड़ी को बाहर निकालने का प्रयास करता है।

* लाम जेई :-

मणिपुर में होने वाली यह वार्षिक दौड़ बहुत लोकप्रिय है।

* मिज़ो ईंचाई :-

यह मणिपुर की परम्परागत कुश्ती है।

* इनबुआन :-

यह मिज़ोरम की परम्परागत कुश्ती है,

* जल्लीकट्टू :-

तमिलनाडु में पोंगल पर्व पर होने वाले इस खेल में बैल को नियंत्रित करने का प्रयास किया जाता है। इसके अन्य नाम वायेली विरट्टू और मंजू विरट्टू हैं।

* पोथू पोट्टू मटसारम :-

केरल में होने वाली बैल दौड़ को पोथू पोट्टू मटसारम कहा जाता है।